15.05 hrs.

MOTION *RE* ACCIDENT TO THE HOIST CHAMBER OF A TUNNEL AT THE BHAKRA DAM

Mr. Deputy-Speaker: The House will now take up the next item on the agenda—Accident to the hoist chamber of a tunnel at the Bhakra Dam. Sardar Iqbal Singh may move his motion.

Sardar Iqbal Singh (Ferozepur): Sir, I beg to move:

> "That this House takes note of the statements made by the Minister of Irrigation and Power in the House on the 22nd August, 24th August, 2nd September and 7th September, 1959 regarding the damage caused by the accident on the 21st August, 1959 to the hoist chamber of a tunnel at the Bhakra Dam."

डिप्टी स्पीकर साहब, भाखड़ा हिन्दुस्तान का एक प्राइज है। वह हिन्दुस्तान के लिए एक फख्र की चीज है और पंजाब के लिए वह एक नेमत है। १९०७ में सब से पहले भाखड़ा का कनसेप्शन पंजाब के एक चीफ इंजीनियर के दिमाग में पैदा हुआ। १९१९ और १९२५ में इस डैम का सरवे हुआ और १९३८ के बाद इस डैम को कन्क्रीट शक्ल सामने आने लगी। लेकिन वे सब प्रिलिमिनरी स्टेजिज थीं और १९४८ के बाद इस डैम ने एक नया रूप धारण किया। पंजाब की तकसीम के बाद ईस्ट पंजाब में आबपाशी के जरिये कम रह गये और उस के बाद भाखड़ा हिन्दुस्तान और पंजाब के लोगों के लिए एक उम्मीद—एक आस—बना हुआ है। उनकी उम्मीदें इस पर मबनी है कि एक दिन यह डैम बनेगा और इस की नहरें चलेंगी, बिजली चलेगी, जिस से पंजाब और राजस्थान की जिन्दगी—देहात की जिन्दगी तब्दील हो जायगी। जहां लोगों को इस पर फख्र है, वहां मैं यह भी कहना चाहता हूं कि पिछले दो सालों में दो तीन इन्सीडेंट्स भाखड़ा पर हुए, जिन की वजह से पंजाब के लोगों में खासकर और हिन्दुस्तान के लोगों में भी इस की निस्बत एक अजीब किस्म के ख्यालात पैदा होते हैं। आखिर यह डैम हिन्दुस्तान का सब से बड़ा डैम है। दुनिया का सब से ऊंचा डैम है, जिस को हिन्दुस्तान के और बाहर के बेहतरीन इंजीनियर्स बना रहे हैं और जिस से पंजाब की किस्मत बदलने वाली है। इन इन्सीडेंट्स से लोगों के विश्वास में दिन-ब-दिन कमी होती नजर आती है। इसी लिये मैं ने यह डिस्कशन इस हाउस में खड़ी की है, ताकि इस हाउस को और इस हाउस के जरिये इस मुल्क के लोगों को पता चले कि असलियत क्या है और डैम पर जो इन्सीडेंट्स हुए हैं, उन का किस ढंग से उपाय हो सकता है, ताकि दोबारा उस किस्म के इन्सीडेंट्स न हों।

पिछले साल स्पिलवे वाल इस डैम से गिर पड़ी। जब सब से पहले दिन डैम में पानी छोड़ा गया तो जो स्पिलवे वाल डैम को डिवाइड करती थी, वह चन्द घंटे भी न ठहर सकी और वह गिर गई। उस के बाद राइट साइड पर एक राक गिर गई। तीसरा मेजर इन्सीडेंट जो इस डैम पर वाके हुआ, वह होइस्ट चेम्बर के बारे में है। इस बारे में इस हाउस में सवाल किये गये। भाखड़ा डैम की कंस्ट्रक्शन का काम हिन्दुस्तान और बाहर के बेहतरीन इंजीनियर्ज के हाथ में है। पहले उस पर आने वाली कीमत का अन्दाजा १७० करोड़ रुपये लगाया गया था, लेकिन दिन-ब-दिन वह कीमत बढ़ती गई। जहां तक फैसलिटीज का ताल्लुक है, वे दिन-ब-दिन कम होती चली गईं। डैम पर जितना रुपया लगता है, वह पंजाब सरकार ने गवर्नमेंट आफ इंडिया से कर्जा लिया है और पंजाब सरकार के उस कर्जे को पंजाब के लोगों ने वापस करना है, चाहे वह बिजली के रेट्स की शक्ल में हो, चाहे आबियाने की शक्ल में हो, चाहे वह वाटर-रेट्स की शक्ल में हो और चाहे बैटरमेंट लेवी की शक्ल में हो। इसी लिए पंजाब का हर किसान इस डैम के बनने के लिए ख्वाहिशमन्द है और वह चाहता

है कि यह डैम इस ढंग से बने कि वह ज्यादा इकानोमिकल हो और उस के फायदे ज्यादा हों। वह इस बात का भी स्वाहिशमन्द है कि उस के फायदे जल्दी से जल्दी उसे मिलें बिजली और पानी की शक्ल में। लेकिन इन इन्सीडेंट्स ने उस के दिमाग में एक तजलजंल पैदा कर दिया है—एक किस्म की हलचल पैदा कर दी है और इसी तजलजंल को दूर करने के लिए इस हाउस में यह डिस्कशन मांगी गई है। सब से पहले होयस्ट चेम्बर को भाखड़ा कंट्रोल बोर्ड की मीटिंग में १९५२ में एपरूव किया गया। फिर जून, १९५४ की मीटिंग में एपरूव किया गया और १९५८ में यह होयस्ट चेम्बर बना। यह ठीक है कि इस का डैम के साथ डायरेक्ट लिंक नहीं था, लेकिन एक गैलरी के जरिये यह कनेक्टिड था। होयस्ट चेम्बर इसलिए बनाया गया था कि जो डैम का पानी है वह रेग्युलेटिड ढंग से छोड़ा जा सके, ताकि सरहिन्द कैनाल को व जो भाखड़ा मेनलाइन है, उसे रेग्युलेटिड ढंग से पानी मिल सके। लेकिन जो डैम में कुल ऊंचाई पानी की पिछले साल थी वह सिर्फ १३५६ एकड़ फीट थी लेकिन इस साल जिस ढंग से वह भरता गया उसके मुताबिक वह १४३२ एकड़ फीट तक ही पहुंच सकी और इतना होने पर ही होयस्ट चेम्बर कोलेप्स हो गया। इस होयस्ट चेम्बर को जब बनाया गया था तो कहा गया था कि यह इतना मजबूत है कि १५०० एकड़ फीट तक जब पानी जायेगा तो भी यह कायम रह सकेगा, उसके गेट्स कायम रह सकेंगे और उसके जरिये पानी की रेग्युलेटिड सप्लाई हो सकेगी। लेकिन जब १४३२ एकड़ फीट पानी की ऊंचाई हुई तो कुल डैम में जो पानी था वह १६ लाख एकड़ फीट के करीब था और जो होयस्ट चेम्बर बनाया गया था वह २४ लाख एकड़ फीट पानी को ध्यान में रख कर बनाया गया था। तो सब से पहली बात यह उठती है हर हिन्दुस्तानी के दिल में, हर इन्सान के दिल में, हर पंजाब के रहने वाले के दिल में कि जो होयस्ट चेम्बर २४०० एकड़ फीट तक के पानी के प्रेशर को बरदाश्त कर सकता था तो क्यों वह १६०० एकड़ फीट पानी के प्रेशर से कोलेप्स हो गया जो नुक्सान हुआ वह तो हुआ, लेकिन क्यों और किस तरह से यह हुआ, यह देखने वाली बात है। यहां पर हम ने हिन्दुस्तान के और दुनिया के बेहतरीन इंजीनियर्स रखे हुए हैं। क्या वे उस वक्त नहीं सोच सकते थे कि जब २४०० एकड़ फीट के प्रेशर के लिए इसको बनाया जा रहा था तो क्या १५०० एकड़ फीट तक लेवल पानी का राइज हो जायेगा तो भी क्या वह इसको सहन कर सकेगा और उसको तो इसे आसानी से सहन कर लेना चाहिये था। लेकिन १४३२ एकड़ फीट पर ही पानी आता है और होयस्ट चेम्बर कोलेप्स हो जाता है। इसके पीछे दो तीन बातें हैं जिन को मैं आपके सामने रखना चाहता हूं।

मैं इस बात को छोड़ देता हूं कि इन्क्वायरी कमेटी क्या कहेगी या क्या नहीं कहेगी। एक बात जरूर है। होयस्ट चैम्बर जिस दिन कोलेप्स हुआ उस चैम्बर के सिरे पर एक होल बोर किया गया। उस बोरिंग में दो बातें बिल्कुल नुमायां तौर पर जाहिर हुई हैं। जब बोर होयस्ट चैम्बर में जाता है उस वक्त होयस्ट चैम्बर में २३ फीट हवा थी और उसके नीचे पानी था। जब हवा का प्रेशर लीक हो गया तो पानी एक दम सौ फुट उस बोर के ऊपर चला गया। यह इंजीनियरिंग का एक फार्मुला है कि जब किसी डैम में या किसी जगह जहां से पानी बिल्कुल भर कर जाना है, उस जगह पर आप हवा के लिए जगह नहीं छोड़ते हैं तो वह पानी डबल प्रेशर जिसे इंजीनियरिंग में कहते हैं, डिवेलेप कर जाता है और उसके बाद वह डैम टूट सकता है। यह जवाब दिया जा सकता है कि चार इंच का पाइप दिया गया था लेकिन चार इंच का पाइप मेरे खयाल में इतने बड़े होयस्ट चैम्बर के लिये और हवा के प्रेशर के लिये काफी नहीं था। एक बात यह भी हो सकती है कि जिस वक्त यह होयस्ट चैम्बर बनाया

[सरदार इकबाल सिंह]

गया तो पहले सोचा नहीं गया कि डैम की ऊंचाई १२५२ फीट से ऊपर चली गई है। और फिर एक टनल के जरिये से होयस्ट चैम्बर बनाया गया। अगर यह पहले सोचा जाता और पहले खयाल किया जाता कि रैग्युलेटिड वाटर सप्लाई देती है तो जब डैम बहुत नीचा था उस वक्त भी एक बड़ी सुरंग से यह चीज बनाई जा सकती थी और उस वक्त शायद जो तमाम का तमाम सिमेंट वहां ले जाया गया और जब उस गेलेरी के जरिये ले जाया गया तो यह भी मुम्किन हो सकता था कि उस सिमेंट का प्रेशर उतना न रहा हो कि उस तरीके से वह होयस्ट चैम्बर के लिये काफी हो। ये सब इंजीनियर्स के सोचने की बातें है। मैं तो एक लेमैन की हैसियत से यह सब बातें आप के सामने रख रहा हू।

इसलिये मैं कहना चाहता हू जिस डैम की देखभाल हिन्दुस्तान के बेहतरीन इंजीनियर्स के हाथ में है, उस के बनाने में भी, उस की टैक्नीकेलिटीज में भी इस तरह की गलतियां हो सकती हैं तो जो छोटे छोटे डैम है, जहां पर इतने काबिल इंजीनियर्स काम नहीं करते हैं, जहां पर इतने काबिल इंजीनियर्स नहीं हैं, इतने अच्छे कसलटेंट्स नहीं हैं, उन का क्या हाल हो सकता है, इस का अंदाज आप खुद लगा सकते है।

यह भी मुम्किन है कि जब पानी इकट्ठा होना शुरू हुआ तो उस का जो प्रेशर डिवेलेप होना था वह सब से पहले डैम पर होना था और उस के बाद दूसरी ओर पहाड़ियां जो वहां हैं, उन पर डिवेलेप होना था। पहाड़ियों में बहुत ग्राउटिंग किया गया। लेकिन एक बात अब भी मैं सरकार से कहना चाहता हूं। भाखड़ा डैम की बाबत सरकार जो कुछ भी करना चाहती है उस को सीधे ढंग से किया जाय और पब्लिक को कांफिडेंस में लिया जाय और पब्लिक को बतलाया जाय कि इतना इस पर खर्चा होगा, दस पंद्रह साल तक ग्राउटिंग करना पड़ेगा और ये ये दूसरे काम करने पड़ेंगे ताकि लोग जानें और समझें कि वाकई में इतनी चीज जरूर करनी पड़ेगी।

जनाब डिप्टी स्पीकर साहब, मैं आप को एक बात और बतलाना चाहता हूं। आप ने और पंडित ठाकुर दास भार्गव जी ने तथा दूसरे दोस्तों ने आज से दो साल पहले यह कहा था कि यह डैम जिस ढंग से बन रहा है, जिस ढंग से इस पर काम चल रहा है, उस ढंग से ही अगर चलता रहा तो लाजिमी तौर पर यह डेम डेढ़ साल देरी में बनेगा। इस को सरकार ने नहीं माना। जिस दिन यह हादसा हुआ उस से एक दिन पहले सरकार ने माना था कि एक साल की डिले पैदा हो गई है। अब आप चाहे कुदरत को दोष दें चाहे किसी और को, यह कहा गया है कि डेढ़ पौने दो साल की डिले हो जायगी। इस डैम पर तमाम मुल्क के लोगों की नजरें हैं और लोगों को मैं चाहता हू कि कान्फिडेंस में लिया जाय और सही सही बात उन को बतलाई जाय। पहाड़ियों पर प्रेशर डिवेलेप हुआ और जो पहाड़ियां कमजोर पाई गई हैं वहां पर कोर वाल्ज बनाई गईं। इन पर जो काफी सा रुपया लगाना पड़ा, उस के साथ ही सब से वीकेस्ट प्वाइंट यह रह गया कि जो टनल १५०० की बुलन्दी के लिये बनाई गई थी वह १४३२ पर आ कर के कोलेप्स हो गई। इस के लिये कौन जिम्मेदार है, इस का भी फैसला होना है।

अब एक कमेटी इंजीनियर्स की बनाई गई है। डिप्टी स्पीकर साहब, किस्मत की बात देखें कि जो आदमी इस डैम को बनाने वाले हैं, वही इन्क्वायरी कमेटी में लिये गये हैं। मैं मानता हूं कि वे बेहतरीन इंजीनियर्स हैं। मैं यह भी कह सकता कि हिन्दुस्तान उन पर नाज कर सकता है। लेकिन यह न्याय की बात नहीं है, पब्लिक के दिलों में कांफि-

कान्फिडेंस पैदा करने वाली बात नहीं है कि जो आदमी डैम को बनाये, उन्हीं की कमेटी बनाई जाय । साथ ही साथ जो यह टूट गया है, इस को ठीक किस ढंग से किया जा सकता है, कैसे इस को करना है, उस के लिये भी फिर उन्हीं की कमेटी बनाई जाती है और उस को कहा जाता है कि आप जो चाहे सो करे । आप मामूली मामूली बातों के लिये जजिज रख कर कमेटी बना देते हैं, दूसरे दूसरे जो लोग होते हैं उन को उस में रख लेते है लेकिन यहां आप ने इस तरह की बात नहीं की है ।

आज आप अगर पंजाब के गावों में जायें तो पायेंगे कि वहां एक ही बात की चर्चा होती है । कहा जा रहा है कि कहीं बांध, कहीं डैम टूट तो नहीं जायगा और अगर टूट जायगा तो हमारे घर में पानी कितना आ जायगा, लुधियाना में कितना होगा, फिरोजपुर में कितना होगा पटियाला में कितना होगा, हरियाना में कितना होगा ।

हमारे कुछ दोस्त भी है जिन को डैम से कोई हमदर्दी नहीं है, पंजाब के लोगों के साथ हमदर्दी नहीं है और वे हमारे कम्युनिस्ट भाई है जोकि पहले यह कहा करते थे कि पानी में से बिजली निकाल ली गई है और अब इस से भी और अधिक जोरों का प्रचार इस बारे में करते हैं । इस वास्ते मैं कहना चाहता हूं कि जो कमेटी बनी है कम से कम उस में उन आदमियों को न रखा जाता जोकि बोर्ड आफ कनसलटेंट्स में हैं क्योंकि वे अपने आप पर इन्क्वायरी नहीं कर सकते हैं और अगर आप ऐसा करते है तो न अपने साथ आप न्याय करते है और न ही पब्लिक के साथ न्याय करते हैं और ऐसी सूरत में इन्क्वायरी कमेटी पर लोगों का विश्वास नहीं हो सकता है । यह डैम की बेहतरी चाहने वालों के हित में भी बात नहीं हो सकती है । इस वास्ते इन्क्वायरी कमेटी में वे लोग नहीं होने चाहियें जोकि बोर्ड आफ कनसलटेंट्स में हो । इसलिये मैं चाहता हूं कि कम से कम दो तीन आदमियों को जिन का कि डैम से ताल्लुक रहा है, उन्हें इन्क्वायरी कमेटी में नहीं रखा जाना चाहिये । मैं यह इस वास्ते नहीं कहता कि मेरी राय उन के खिलाफ है, या मैं यह बात एज ए मैन उन के बारे में कहता हूं बल्कि इसलिये कहता हूं कि पब्लिक कान्फिडेंस इन्क्वायरी कमेटी में रेस्टोर हो और आइंदा ऐसी गलती न हो और भाखड़ा डैम पर जो एतमाद, जो विश्वास लोगों का है, वह बना रहे और जो उम्मीदें वे इस से बांधे हुए है, वे उम्मीदें उन की खत्म न हो जायें ।

इस के साथ ही साथ मैं यह भी चाहता हूं कि इस इन्क्वायरी कमेटी में कम से कम जो चेयरमैन हो वह किसी हाई कोर्ट का जज होना चाहिये और उस के साथ साथ दो तीन ऐसे इंजीनियर्ज हों जिन का भाखड़ा डैम के साथ कोई ताल्लुक नहीं रहा है । चाहे ये रिटायर्ड इंजीनियर्ज हों या कोई और इंजीनियर्ज हों, लेकिन उनका लिया जाना इस वास्ते जरूरी है ताकि जो कमियां हैं वे बाहर आ सकें ।

एक बात यह भी है कि जो इन्क्वायरी कमेटी बनी है उस की एक भी मीटिंग अभी तक नहीं हुई है, इस ने एक कागज का भी जांच पड़ताल नहीं की है और इस ने कहा है कि जब डैम खाली होगा तो हम होयस्ट चैम्बर को देखेंगे और बतायेंगे कि क्या हुआ है । लेकिन यह चीज क्यों हुई, किस ढंग से हुई, कौन बनाने वाले थे, क्या क्या गलती हुई, कैसे हुई, कैसे फाइलें चलीं इस सब के बारे में उन का फर्ज था कि वे पता लगाते

[सरदार इकबाल सिंह]

और कागजात को अपने कब्जे मे लेते और इन्क्वायरी करते ताकि पब्लिक कान्फिडेंस जब कमेटी मे रेस्टोर होता । लेकिन वह बात नही की गई है । अभी तक तो यही कहा गया है कि डैम खाली होगा

पंडित ठाकुर दास भार्गव (हिसार) चन्द माह मे वह खाली होगा ।

सरदार इकबाल सिंह चन्द माह लगे या इस से भी देरी लगे, लेकिन मैं यह चाहता हूँ कि इस कमेटी को बदल दिया जाय । यह इस मिनिस्ट्री के हक मे होगा, यह भाखरा कंट्रोल बोर्ड के हक मे होगा और लोगो के इंटरेस्ट मे होगा कि इस एन्क्वायरी कमेटी के बजाय दूसरी एन्क्वायरी कमेटी बनाई जाय । आप जानते हैं कि भाखरा के सिलसिले में इस से पहले एक दुलत कमेटी बनी लेकिन इस दुलत कमेटी की रिपोर्ट आज तक शाया नही की गई । जिस दुलत कमेटी ने भाखरा नहरो के सिलसिले मे इतना कुछ कहा गया वह आज तक शाया नही की गई । चीफ इंजीनियर्स की कई कमेटिया इरिगेशन डिपार्टमेंट ने बनाई, इस के बावजूद भी लोगो को कुछ नही बताया गया । मुझे अफसोस है कि इस कमेटी ने जो रिपोर्ट दी है उन को शाया नही किया जाता और काल्ड स्टोरेज में रक्खा गया है । इसलिये मै चाहता हू कि हाई कोर्ट के जजेज का एक बोर्ड बने । बेशक आप उस मे किसी इंजीनियर को ले ले, किसी हिन्दुस्तान के बाहर के इंजीनियर को ले लें इस एन्क्वायरी बोर्ड में । लेकिन इस डैम के स्ट्रक्चर में जो बहुत गलतिया हुई है उन को आप जरूर देखें । अगर मिनिस्टर साहब ने इस से सबक लिया तो इस से बहुत फायदा हो सकता है ।

इस के बाद मैं भाखरा कंट्रोल बोर्ड के सिलसिले में, जोकि भाखरा को कंट्रोल करता है, एक दो बातें कहना चाहता हूं । १७० करोड रु० का कर्जा पंजाब गवर्नमेंट के जिम्मे है, हालांकि पंजाब गवर्नमेंट का हाथ इस में सबसे कम है । भाखरा कंट्रोल बोर्ड सेंट्रल गवर्नमेंट का है । जो कुछ मिनिस्ट्री आफ इरिगेशन एंड पावर चाहती है वह हो जाता है । में जानना चाहता हू कि जब पंजाब गवर्नमेंट के ऊपर इतना कर्जा डाला जा रहा है तो इस एन्क्वायरी कमेटी को बनाते वक्त क्या पंजाब गवर्नमेंट से पूछा गया, पंजाब के किसी आदमी से पूछा गया । भाखरा कंट्रोल बोर्ड के चेअरमैन पंजाब के गवर्नर हैं । हम उन की बहुत इज्जत करते हैं, लेकिन जब तक वह गवर्नर है हम उन के लिये कुछ कह नहीं सकते कि यह गलतिया भाखरा के सिलसिले मे हुई हैं, और इस चीज से भाखरा कंट्रोल बोर्ड को सबक हासिल करना चाहिये । मैं कहना चाहता हू कि आज इस बोर्ड का चेअरमैन कोई दूसरा आदमी होना चाहिये था । अगर इस का चेअरमैन हमारे हाफिज जी होते तो हम यहा पर उन से क्वेश्चन कर सकते अगर वहा पर पंजाब के चीफ मिनिस्टर या इरीगेशन मिनिस्टर होते तो पंजाब की असेम्बली मे उन से लोग पूछ सकते । मैं एक पुरानी मिसाल देता हू । पांच या छ साल हुए पब्लिक अकाउंट्स कमेटी ने भाखरा के चीफ इंजीनियर से पूछा कि बताइये आप के हिसाब किताब का क्या सिलसिला है । उस चीफ इंजीनियर ने कहा कि मैं आप के नीचे नहीं हूं । सेंट्रल गवर्नमेंट कहती है कि वह हमारे नीचे नही है, पंजाब गवर्नमेंट कहती है कि वह हमारे नीचे नही है । यह पता नही लगता है कि आखिर वह किस के नीचे है । किसी ढंग से वह किसी के कंट्रोल में नहीं है । मेरी बिल्कुल यह राय है कि इस चीज को बदल देना चाहिये, इस के कान्स्टिट्यूशन को बदल देना चाहिये । इस का चेअरमैन या तो पंजाब के चीफ मिनिस्टर या किसी और मिनिस्टर को बनायें या फिर सेंटर के इरिगेशन ऐंड पावर मिनिस्टर को बनायें ताकि कंट्रोल बोर्ड के लिये किसी के ऊपर जिम्मेदारी

हो । कहीं पर इस बोर्ड की रिपोर्ट रक्खी जाय और हम उसे डिस्कस कर सकें कि हमारा ३० या ४० करोड़ जो रुपया है वह किस तरह से खर्च होता है । आप तो चूंकि यह इडिपेंडेंट बाडी है इस लिये हम इस में दखल नहीं दे सकते । ठीक है, लेकिन इस में जो इर्रेगुलैरिटीज होती हैं, जो खामियां होती हैं, उन का असर पड़ता है पंजाब के लोगों पर । इसलिये मैं चाहता हूं कि इस कंट्रोल बोर्ड ने आज तक जो फंक्शन किया है वह किया, लेकिन उस बाडी पर किसी का कंट्रोल नहीं है । उस को चलाने के लिये अच्छे ढंग की बाडी बनाई जानी चाहिये । और दूसरी प्रोजेक्ट्स के लिये भी कुछ सबक हासिल करना चाहिये कि इस किस्म की बाडी बनाने से कोई अच्छाई नहीं हो सकती ।

६ तारीख को कंट्रोल बोर्ड की मीटिंग होती है, बोर्ड कंसल्टेंट्स की मीटिंग होती है, उस में पहले तो यह कहा गया कि आज तक ५५ लाख का घाटा है, फिर वह कहते हैं कि ४५ लाख रु० का हमें फारेन एक्सचेन्ज चाहिये । आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि जिस चीज में ४५ लाख रु० का फारेन एक्सचेन्ज लगना हो उस का घाटा ५५ लाख ही नहीं हो सकता जो मशीनरी ४५ लाख रु० की आयेगी उस में खर्चे को मिला कर कहीं ज्यादा रुपये की दरकार है । इस लिये गवर्नमेंट को कम से कम अपनी तौर पर सब बातों का पता लगाना चाहिये । कंट्रोल बोर्ड की मीटिंग हो चुकी, बोर्ड आफ कंसल्टेंट्स की मीटिंग हो चुकी, तब इस का अन्दाजा हो जाना चाहिये कि इतना नुक्सान हुआ और अब इस ढंग से काम किया जाना है । इस के साथ इस कंट्रोल बोर्ड में एक और बात की गई । जो टनेल है उस को ठीक करने का कोई रास्ता नहीं हो सकता है, इस लिये एक और टनेल फिर बनाई जाय और इस के जरिये पानी को कंट्रोल किया जाय, और इस में खासा रुपया लगेगा । मैं कहना चाहता हूं कि अगर कोई और तरीका नहीं तो फिर यही तरीका हो सकता है कि और उस में कम से कम कई लाख रुपया लगेगा । दूसरा तरीका यह हो सकता है कि उस में दुबारा सीमेंट डाल कर टनेल को बन्द किया जाय । मुझे पता नहीं यह कहां तक एफेक्टिव हो सकता है लेकिन इस का अन्दाजा लगाया जा सकता है कि जिस जगह पर ४५ लाख रु० फारेन एक्सचेन्ज में लग सकता है तो उस काम को करने में २ करोड़ रु० जरूर लगेगा । यही नहीं, गवर्नमेंट ने पहले कहा था कि तीन साल में यह हो जायेगा, कम से कम सन् १९६० में हो जायेगा, लेकिन पिछले महीने की ३१ तारीख को यह कहा गया कि यह सन् १९६१ में पूरा होगा । इस बारे में भी गवर्नमेंट को पूरा खयाल रखना चाहिये क्योंकि पंजाब की सारी इरिगेशन स्कीमें इसी पर निर्भर करती हैं । इस के बाद यह कहा जाता है कि जब तक दाहिने तरफ का पावर हाउस नहीं बनेगा तब तक यह डैम एकानमिकल नहीं हो सकता, एफेक्टिव नहीं हो सकता और पंजाब के लोगों के लिये लाभदायक नहीं हो सकता । इस लिये इस चीज को भी इस के साथ लिया जाय । इस के अलावा इस मामले पर जितना खर्च आना है, जितने टाइम में इरिगेशन होना है, इस के लिये गवर्नमेंट को एक स्टेटमेंट लाना चाहिये और लोगों से कहना चाहिये कि पंजाब को क्या फायदा होगा । हम पंजाब के अखबारों में पढ़ते हैं कि अगर डैम को ड्रेन करना पड़ा तो ६ करोड़ रुपया बिल्कुल जाया जायगा । तीन महीने में सरहिंद कैनाल और भाखरा डैम कैनाल बन्द रहेंगी तो उस में कुछ और घाटा हो जायेगा । इस के बाद जहां तक पावर हाउस का ताल्लुक है एक मोटा लेअर किया गया उस से कुछ नहीं हो सका, दूसरा लेअर करने की कोशिश है । इस वास्ते शायद यह काम हो जाय, लेकिन अगर नहीं हुआ तो पंजाब में जो टनेल्स लगनी हैं उनका बहुत सा नुक्सान हुआ है । उन की लाइफ जरूर कम हुई है । वह ठीक किया जा सकता है । लेकिन उन के नुक्सान का कितना अन्दाजा है इस के लिये गवर्नमेंट को स्टेटमेंट देना चाहिये ।

[सरदार इकबाल सिंह]

इस के सिवा इस डैम में जो रुपया लगा है, वह लोगों को बेटरमेंट लेवी के जरिये से वापस देना पड़ता है । जो गलतियां हुई हैं, बोर्ड आफ कसल्टेंट्स से जो गलतियां हुई हैं, इसलिये कि इंजीनियर्स ने गलत मश्विरा दिया हैं, इस के लिये पंजाब गवर्नमेंट से रुपया वसूल न कर के सेंट्रल गवर्नमेंट को ग्राट देना चाहिये । पंजाब गवर्नमेंट के ऊपर यह कर्जा नहीं लादा जाना चाहिये । इंजीनियर्स जो गलती करते हैं, गलत मश्विरा देते हैं, गलत फैसले करते हैं उस के लिये पंजाब के किसानों से कह दिया जाय कि तुम्हारे ऊपर १७० करोड़ रु० का कर्जा है, इस लिये तुम बेटरमेंट लेवी दो, यह कहां तक जायज है? कम से कम कंट्रोल बोर्ड की वजह से जितने रुपये का नुक्सान होता है उतनी रकम तो गवर्नमेंट आफ इंडिया को पंजाब गवर्नमेंट को ग्राट की शक्ल में देना चाहिये । पंजाब के किसानों से उसे लेने का आप को कोई हक नहीं है । जो गलती यहां के लोगों की हो, यहां के इंजीनियर्स की हो, उस का खाम्याजा पंजाब का किसान क्यों भुगते ?

इसलिये मैं ने इस डिसकशन की मांग की थी कि पंजाब के लोगों को आप के ऊपर एतमाद हो । इस के लिये यह जरूरी है कि जितना डैम का नुक्सान हुआ है, जितना नुक्सान होने का खयाल है इस के लिये गवर्नमेंट को एक अनक्वालिफाइड स्टेटमेंट देना चाहिये । इस के बाद इस कमेटी आफ एन्क्वायरी को बदलना चाहिये । जो नुक्सान हो उसे पंजाब गवर्नमेंट को ग्राट के तौर पर देना चाहिये क्योंकि पंजाब के किसानों से उसे लेने का आप को कोई हक नहीं है ।

इन अल्फाज के साथ मैं अपने मोशन को मूव करता हूं ।

Mr. Deputy-Speaker: Motion moved:

"That this House takes note of the Statements made by the Minister of Irrigation and Power in the House on the 22nd August, 24th August, 2nd September and 7th September, 1959 regarding the damage caused by the accident on the 21st August, 1959 to the hoist chamber of a tunnel at the Bhakra Dam."

May I have an idea as to how many Members want to participate? There are 13 Members. The mover has taken half an hour. May I have an indication of the time that will be required by the Minister?

The Minister of Irrigation and Power (Hafiz Mohammad Ibrahim): My time shall depend upon what I hear (*Interruptions*).

Shri Naushir Bharucha (East Khandesh) You are going to hear a lot.

Mr. Deputy-Speaker: At the most we have got 1½ hours for other Members to participate Should I fix 10 minutes as the time limit for each? The whole amount has to be shared by all the Members here I have no objection to giving more time But then only fewer Members could be accommodated and there might be grievances on that score I think hon Members will be able to condense whatever they want to say within ten minutes

Pandit Thakur Das Bhargava: May I just submit one point for your consideration? We have already seen the statements of the hon Minister, which were made three times in this House We have read them all. The time of the House could be utilized in a much better way if the hon Minister is asked to give us factual information of the position as it exists today. If he speaks first and gives us an inkling of what he knows, then the discussion will be more profitable and, at the same time, our time will be utilized in a better way. Otherwise, the same thing will be repeated. Let him give us information.

Mr. Deputy-Speaker: Even if the Minister gives us more details, facts

and figures, then too the same thing would be repeated here. Now I call on Ch. Ranbir Singh. The time limit of ten minutes will have to be strictly enforced.

चौ० रणबीर सिंह (रोहतक) : उपाध्यक्ष महोदय, भाखड़ा डैम का नाम हमने तब से सुनना शुरू किया था जब कि हम छोटे छोटे बच्चे थे और जैसे जैसे हम बड़े होते गये त्यों त्यों उसका नाम और जिक्र भी ज्यादा बढ़ता गया और जब देश आजाद हुआ तो भाखड़ा डैम बनने का स्वप्न कुछ पूरा होता हुआ दिखाई देने लगा और यह आशा होने लगी कि जिस बात को आज तक हम सुनते आये है वह अब अमल में आयेगी।

उपाध्यक्ष महोदय, जिस वक्त यह भाखड़ा डैम का नाम शुरू हुआ था उस वक्त इसके मुताल्लिक पजाब लेजिस्लेटिव कौंसिल में जो चर्चा हुई थी और बहस हुई थी उसको अगर पढ़ा जाय तो आप पायेंगे कि उस वक्त यह माना जाता था कि पंजाब का यह जनूबी हिस्सा जिसको कि आज हिन्दी रीजन कहते है और जो एक सूखा हुआ इलाका था उसको सैराब करने के लिये सतलुज के अन्दर एक डेम बनाया जायगा ताकि उस इलाके को खुशहाल बनाया जा सके। अब हिन्दुस्तान आजाद हुआ और जैसा कि आप जानते हैं कि डेमोक्रेटिक सिस्टम के अन्दर कई किस्म के दबाव पड़ते है और जब यह दबाव यहां भी पड़ने शुरू हो गए और उसका नकशा बदलना शुरू हो गया। जो उसकी ऊंचाई के अंदाजे का नकशा था वह भी बदला और उसका पानी कहां जायगा उसका भी नकशा बदला जिस इलाके के सैराब करने के वास्ते यह डैम बनाने का विचार किया गया था वह केवल के एक तिहाई ही रह गया और उसके बाकी दो हिस्से इस डैम से सैराब होगे वह पंजाब का दूसरा इलाका सैराब करने के लिये मखसूस किया गया। अब उपाध्यक्ष महोदय, मैं यह तो कहना नहीं चाहता कि शायद यही एक कारण हो कि यह जो बहुत बड़ा वाकया हुआ हादसा हुआ वह इस पालिसी के बदलने के बायस हुआ सही या गलत तौर पर बदला, शायद यह उसी का नतीजा हो . . . .

उपाध्यक्ष महोदय : क्या मेम्बर साहब की यह सब कहने से यह मंशा ह कि उस इलाके की बददुआ लग गई जो यह हादसा हुआ ?

चौ० रणबीर सिंह : बददुआ की कोई बात नही है। हम तो सब मे ही हमदर्दी रखते हैं। और जैसे कि हम अपने गरीब भाइयो से हमदर्दी रखते है वैसे ही दूसरो इलाके के भी गरीब आदमियो से भी हम पूरी पूरी हमदर्दी रखते है।

उपाध्यक्ष महोदय, अब इस से पहले कि मैं कोई और बात कहूं मै यह कहे बगैर नहीं रह सकता कि वहां के इजीनियर्स ने एक बहुत बड़ा काम हिन्दुस्तान के लिए किया और जिन इंजीनियरो ने उस काम को आगे बढ़ाया उनका नाम हिन्दुस्तान के इतिहास मे हमेशा जिन्दा रहेगा इस में मुझे कोई शक नही है। इस के साथ ही मै यह भी कहे बगैर नहीं रह सकता कि इस देश के अन्दर केवल एक डैम ही नही बना और केवल एक ही मल्टीपरपज प्रोजेक्ट नहीं बना था बल्कि और भी कई थे। दामोदर वैली का और हीराकुड डैम भी थे जो कि इतने बड़े तो शायद नही होंगे लेकिन यह सही है कि डैम बनने के बाद भी वहां का जो पानी है वह आज तक इस्तेमाल नहीं होता। अगर किसी डैम ने अपने वहां के एक एक चुल्लू पानी का भी इस्तेमाल किया ह तो वह केवल भाखड़ा डैम ही है और जिस में कि वहां के किसानों की भी मदद है। वहा के काश्तकार लोग कभी इस बात से नहीं घबराये कि कम्युनिस्ट पार्टी वाले लोग आकर उन्हें क्या क्या बहकाते हैं और बरगलाने की कोशिश करते हैं। कि उन पर कितना सारा बेटरमेंट टैक्स लगेगा या उस पानी का उन्हें लाभ भी होगा तो कितना। वहां के काश्तकारों ने जितना भी पानी मयस्सर था जितनी भी पानी की कैपेसिटी

[चौ० रणबीर सिंह]

थी उस तमाम पानी का इस्तेमाल किया है और उसके इस्तेमाल करने के वास्ते पंजाब के इंजीनियरों ने नहरें बनाई और इसलिये मैं वहां के इंजीनियरों को बधाई दिये बगैर नहीं रह सकता कि दूसरे इलाकों में जो बड़े बड़े बांध बन रहे हैं उनके मुकाबिले में यहां क इंजीनियर्स ने ज्यादा अक्लमंदी से काम करना शुरू किया और अभी जब कि बांध बन ही रहा है और उसका बनना खत्म नहीं हुआ है, लाखों एकड़ जमीन को सैराब करने में उसका फायदा उठाया गया है और पहले की अपेक्षा करोड़ों मन गल्ला अधिक पैदा किया है। गल्ला ही क्यों कपास भी पहले से अधिक पैदा की गई और चीनी पैदा करने का भी इंतजाम हुआ है। देश को उस बांध से बहुत अधिक लाभ पहुंचा है। इस बड़े डैम को बनाने के लिये अमरीकी विशेषज्ञों को यहां पर बुलाया और उनकी मदद ली यह तो ठीक ही किया लेकिन इस के साथ ही मैं यह कहे बगैर भी नहीं रह सकता कि एक छोटी सी बात जो कि एक छोटे से किसान क दिमाग में आ सकती है, मेरी समझ में नहीं आती कि वह बात इतने बड़े बड़े विशेषज्ञों के दिमाग में क्यों नहीं आई ? जैसा कि अभी सरदार इकबाल सिंह ने बताया कि जब टनल बनने लगा तो चैम्बर बनाने की जो तजबीज थी वह उनके दिमाग में उस समय नहीं आई और जो तजबीज उनके दिमाग में आई वह कुछ पीछे आई।

इसके अलावा भाखड़ा और नांगल के दो डैम हैं। अब नांगल डैम के अन्दर आप जायें तो वह जो केबुल गैलरी है उस गैलरी के दो रास्ते हैं एक नीचे से और एक ऊपर से रास्ता है। अब उस होआएस्ट चैम्बर को हम ऊपर से खोलते तो शायद वह मशीन ठीक जगह निशानों पर नहीं टिकती। मेरी समझ में नहीं आता कि इतने बड़े बड़े विशेषज्ञ थे वह आसानी से सोच सकते थे कि जहां तक कि मशीन के लगाने का ताल्लुक है वह उसी होआएस्ट चैम्बर से लगायें और वहीं से फिट करें लेकिन जहां तक होआएस्ट चैम्बर से ताल्लुक कायम करने का सवाल है उसको ऊपर से भी किया जा सकता था और लिफ्ट के जरिए भी किया जा सकता था। मैं मानता हूं कि मुरम्मत का जो कम से कम खर्चा पड़ने का अन्दाजा दिया गया है ५५ लाख रुपये का वह ५५ लाख से कम ही होता। मेरी तो समझ म नहीं आता कि जहां इतने बड़े बड़े इंजीनियर्स और विशेषज्ञ हों, वहां उनके दिल में यह खयाल तक न आये कि उस होआएस्ट चैम्बर से ताल्लुक हम ऊपर से हम क्यों न करें और यदि हमें केबुल गैलरी के जरिए पहुंचना हो तो उस गैलरी को जल्दी से बन्द करें और लिफ्ट से आयें इसका फायदा यह होता कि वहां पहुंचने में कम वक्त लगता।

इसके अलावा आज जिन बातों के ऊपर सोचा जाता है वह जरा देर में सोचा जाता है और जैसे कि उसकी दीवारों को तोड़ कर के पानी निकालने का दो जगह से इंतजाम किया गया और अब जाकर यह कहा जा रहा है कि पावर हाउस के अन्दर पानी को आने से जब रोक सकेंगे तभी काम चलेगा अन्यथा नहीं तो क्या यह बात पहले से नहीं सोची जा सकती थी। लेकिन यहां पर एक बात मैं कहे बगैर नहीं रह सकता कि ऐसे बहुत ही थोड़े भाई होंगे जोकि भाखड़ा डैम की स्थिति का स्वयं अध्ययन करने वहां पर जायेंगे और शायद उनके दिल में यह खयाल पैदा हो गया हो कि भाखड़ा डैम का सारा ही काम बंद हो गया है तो मैं उनकी इस आशंका का निवारण करना चाहता हूं और उनको विश्वास दिलाना चाहता हूं कि ऐसी कोई बात नहीं है। भाखड़ा बांध को जहां तक ऊंचा करने का सवाल है वह काम जारी है और वह उसी स्पीड से जारी है जिस स्पीड से कि यह नुक्सान होने से पहले शुरू किया गया था। अलबत्ता जहां तक उसके पावर हाउस बनाने का ताल्लुक है उसका काम जरूर रुका हुआ है और जब तक वहां पानी खुश्क नहीं होगा तब तक पावर हाउ का काम दुबारा शुरू नहीं किया जा सकता है

अब उन्होंने इसके लिए रोक लगाने की सोची है और उसके लिए कोशिश शुरू हो गई है तो मैं पूछना चाहता हू कि यह सेफ्टी वाल्व के तौर पर पहले क्यो नही बनाया गया और इतने बडे बडे इजीनियर्स वहा पर मौजूद थे उनके दिमाग मे पहले यह चीज क्यो नही आई? कि अगर भगवान न करे कभी कोई हादसा हो जाय तो उसका क्या इतजाम होगा।

आखिर इन्सान के काम के अन्दर बहुत सारी खराबिया आ सकती है और उनके लिए सेफ्टी वाल्व छोडे जाते हैं। तो मै यह जानना चाहूगा कि इस के लिए सेफ्टी वाल्व क्यो नही छोडे गए ।

अब पानी रोकने का सवाल है। मै तो समझता हू कि पहाड के बडे बडे टुकडे डालने से यह काम हो सकता है । आज जो पानी का खतरा है उसने तो एक तरह से आर्टिजन वैल की शक्ल ले ली है। अगर पहाड के टुकडे डाले जाए तो वह रुक सकता है । वह तो फव्वारा सा हो गया है। टनल को बन्द करने से नुकसान तो होगा लेकिन बहुत ज्यादा नही होगा । तो मै समझता हू कि जहा तक टनल को बन्द करने का काम है उसको जल्दी से जल्दी करना चाहिए। उस मे बड बड पहाड के टुकडे या सीमेंट के बेग डाले जाए और टनल को जल्द से जल्द बन्द किया जाए ।

इसके अलावा मै एक चीज और अर्ज करना चाहता हू । एक यह तजवीज है कि उस टनल का रास्ता एक छोटी टनल बना कर, हाइस्ट चेम्बर को छोडते हुए, आखिरी टेल के साथ जोड । उस टनल के बनाने मे तीन माह का वक्त लगेगा । उस टनल को भी उसी तरह बना सकते है जैसे कि पहली टनल्स बनी। लेकिन जो आखिर का टुकडा है उसको उडा कर वह उसका रास्ता जोडना चाहते है । मै चाहता हू कि इस के ऊपर गौर किया जाए। जैसा कि सरदार अजित सिंह जी ने जिक्र किया पहले ब्लास्ट करने से पहाड़ कमजोर हो गया था। और यह उसी का नतीजा है कि यह पानी आ गया । तो मैं चाहूगा कि इसको रोकने से पहले इस पर शान्ति से गौर कर लिया जाए ।

15.42 hrs.

Shri Goray (Poona). Mr Deputy-Speaker, Sir, I must confess that it is very difficult for the House to discuss this issue because none of us, neither the hon Ministers who are sitting opposite nor any one of us, is a qualified engineer But it is the duty of this House to voice the sentiments of the people and to give expression to the misgivings and the doubts that the people at large are harbouring. At the same time I would like to say that this discussion should not start a witchhunt because the engineers who are taking care of the Bhakra Dam are some of the best engineers that we have and whatever their faults might be I think we shall have to depend on them for the future development of this country

We feel concerned very much about this accident because the Bhakra Dam is considered to be the crowning achievement of our engineering fraternity The hon Prime Minister, when he visited that dam, I think, described it as a modern place of pilgrimage That is how we look at it and therefore when we hear of some damage we feel naturally perturbed

You may be remembering, Sir, that this is not the first time that things have gone wrong in Bhakra Last year we heard about some damage to the central spillway But we were assured that that did not amount to much We also heard that the Public Accounts Committee of the Punjab State unearthed something fishy about the whole thing As one of our hon colleagues said here, that report has yet to see the light of the day. Then there was the Dulat Committee enquiry and they also said that there was corruption to the tune of some crores of rupees. I am pointing out these things because people feel that

[Shri Goray]

something has been going wrong in Bhakra and it is not allowed to see the light of the day.

We also hear that because of the unpredictable difficulties in drilling and grouting the completion of this work will have to be postponed from February 1960 to the summer of 1961. The cost estimates have now been calculated at Rs. 170 crores instead of Rs. 75 crores. So, these are all the facts which pile up to a formidable case against what is happening in Bhakra, namely, whether the estimates have been correct, whether proper attention is being paid and whether this dam which we consider as the pride of our nation is going to withstand the ravages of time and the pressure of the water that we are going to impound.

Yesterday we had the benefit of listening to Shri Khosla I wish that the whole of his statement was taken down and circularised amongst the Members of Parliament so that it would have been easier for us today to discuss these things in a realistic manner.

About the hoist chamber and the tunnel I wish I had the self-assurance of my hon. friend, Chaudhuri Ranbir Singh, who spoke just now and told the House that if the engineers had the commonsense of a peasant they would have done something else. I have not that self-assurance. I think that the engineers must have done what they did there in erecting the hoist chamber after a lot of consultations and deliberations. But it is too early for us to say as to what exactly went wrong with the hoist chamber. I tried to find it out from Shri Khosla and the hon. Deputy Minister and they said that "the whole thing is submerged under water and we do not know where exactly it gave way, and what happened". So, we do not know anything. But I would say that there are certain things which have to be clarified as early as possible because, as my hon. friends from Punjab very rightly said, the people of Punjab, the peasants feel that their destiny is bound with the destiny of Bhakra-Nangal and they have to pay for its cost. Therefore some of these things which have been voiced through the daily press and by some people here and outside should be clarified.

One of the suspicions is that due to the pressure from the Punjab Government storage in the Gobindsagar Dam was expedited. It ought to have been allowed to settle down for a year or so and after that storage should have been restored to but because there was pressure from the Punjab Government they started early and therefore the tunnel and the hoist chamber were not ready to receive the pressure of water that was stored there.

The other thing is that there is a reference in the papers that have been given to us to coytee blasting. I appeal to you, Sir, to understand our difficulties in discussing the subject because I am quite sure that even the hon. Minister will not be able to tell us what these particular words mean, that is, this coytee blasting, wooden flume and all that. We do not know what exactly they mean. But it is said that some people have expressed these doubts that because of the coytee blasting damage might have been done to the tunnel or to the hoist chamber. I do not know exactly what has happened but it is something that should be gone into because they said that this coytee blasting has been suspended or discontinued. Now, we want to know whether it is due to this or due to the fact that sufficient care was not taken to see that coytee blasting was not done near about the place that this damage has been done.

Then, one more thing that perturbs us is that water is gushing through the galleries and it has not been found possible to stop the flow of water. We have been assured that as this hoist chamber is about 150 feet away from

the dam, the dam has nothing to fear, it is not likely to be damaged But, after all, in such a big reservoir 150 feet is not very far off, it is not a very big distance

The other thing is this When we are told that there is no likelihood of any damage to the dam itself, I would like to ask this what is happening to the water which is gushing through the galleries? Because it is going right through the dam, and we were told that the water will continue to gush through the galleries, the length of which may be miles—I do not know how long the galleries are If this water goes on continuously gushing through the galleries down to the power house for weeks and months together, I would like to be assured once again that no harm will come to the dam

These are the things As I said, I do not want to start a witch-hunt or say that our engineers are incapable or derelict in their duty But I would say this, that from this we shall have to draw some lessons, that we shall have to take very great care, because these engineers who were building these dams were compared to Bhagirath of ancient times who brought the Ganges and made the Gangetic plain fertile If you want that glory you will have to be very watchful I would therefore request the Minister in charge of Irrigation and Power and the Deputy Minister and all the engineers to be more careful and to take the earliest steps to assure the people, not to give some sort of cock-and-bull story, but to tell us facts and tell us what is the damage, what is the cost of the damage, how soon it can be repaired, whether it can be repaired at all These are the things about which the House should be informed.

Shri D. C Sharma (Gurdaspur): Mr. Deputy-Speaker, when a patient is dangerously ill you do not depend entirely on the family physician: you try to get expert advice from some specialist, whether from your own country or from other countries Our Bhakra project is in a perilous state. There is no doubt about it This is the third disaster that is happening to it, and as one newspaper has said, it is a project which is being dogged by ill-luck God forbid that we should be dogged by ill-luck

But the fact of the matter is this, that without looking at it from the point of view of a Punjabi and without narrowing the scope of the discussion and saying that it is concerned only with the Punjabi peasant and without saying that some part of the money which has been given to Punjab as loan should be remitted, I would say that the Bhakra project is our international show piece and it should be looked at from that angle. The whole world is watching this Bhakra project And if the Bhakra project goes wrong, I think it is not only the Punjabi peasant who will suffer, a bad deal he will get, no doubt, he will suffer in prestige and our irrigation engineers will suffer in prestige, but I tell you the prestige of India will suffer Therefore, I would submit very respectfully that this whole thing should be looked at from an emergency angle

I have looked through this statement which has been placed on the Table of this House I have read every word of it, I have underlined them I have also looked at the statement which has been given to us by the Lok Sabha Secretariat today And I find that these statements are like soothing syrup given to the Members of Parliament. In vain I have looked into these statements for this note of 'national emergency', the note of 'national disaster', all these statements are made in a routine way, in the routine language and in the routine manner

15.55 hrs.

[PANDIT THAKUR DAS BHARGAVA *in the Chair*]

And I am very unhappy to read the report which has been given to us.

[Shri D. C. Sharma]

What is this report? I think this report is the report on which is going to be based the whole fate of this disaster and which is going to mend the disaster. I have read this report. It deals with bonus to workmen—of course I honour those workmen who have lost their lives—, financial compensation and so on. This report is written in the style of a business concern which is having a normal routine meeting and which is discussing a normal routine business.

Nothing is given in this report to show that any concrete, positive, fruit-bearing steps are going to be taken. The disaster took place on the 21st August, if I am right. And today is the 10th of September. And I find from the *Hindustan Times* this morning a very alarming report. And that report is based upon what the Special Correspondent had been told by the people on the spot. It says that no headway has yet been made. We are groping in the dark for a remedy We are trying to find some way of putting right this disaster. But, Sir, nothing has happened.

I say, I am an Indian, proud of my Indian engineers, proud of my country, proud of everybody I would say to the hon Minister that the time has come when we should lay aside our pride and when we should get hold of engineers from outside to guide the whole thing. to find out the real defects.

Now, they say that we shall appoint an enquiry committee afterwards to find out the causes. Well, unless you know the causes how can you cure the disease? I say the whole thing is being done in an *ad hoc* manner and no proper thought is being applied to a very difficult situation.

Today we are told that the dam is all right, the dam is going up like anything, but the power-house has been affected, still the water is flowing in the channels. We are told all these things. But what I mean to say is this, that we are afraid, we are terribly afraid and we are full of misgivings, we are full of apprehensions. Our misgivings may be misplaced, but there are misgivings in my mind. I know about an hon. Member of this House who said to me, "Who knows, the water may be flowing in my bedroom some day." This is what an hon. Member of this House told me—I do not want to mention his name.

So what I mean to say is that the whole problem should be placed on a war footing and we should not attach too much importance to the technical knowledge and to the building ability of all those men who are here. We are proud of them, but the time has come when we should get hold of some outside experts They should examine the thing. They should tell us what should be done Because, unless that is done, I think the public will not feel reassured and the public will not feel happy in any way. This is the first thing that I want to say.

The second thing is this We must do some re-thinking so far as the technical set-up of the Bhakra Board is concerned We should also do some re-thinking so far as the Bhakra Control Board is concerned We should do our re thinking on both these problems I know when I was fighting my election in 1952 and Bhakra was at that time part of my constituency, I found a lot of groupism there I ask the hon Minister, has this groupism stopped? Certainly not. These engineers tell us that fifty-five lakhs are required, and they say to their friends that five crores will be required. They say one thing for our good and another thing for the delectation of their friends They prepare one statement to be given to the Members of Parliament and other statements which are given to their friends in their drawing rooms and elsewhere. I suggest respectfully that we should try to have this Board reconstituted straightway. We should not stand

upon ceremony, because it is a time of emergency now The board should be reconstituted, so far as the set-up is concerned, we must make radical changes in it I have no animus against anybody, I respect all the engineers that have made and that are making Bhakra today But I sound a note of warning that this thing is not being done as efficiently as it should be done, and that we are facing a very drastic situation, and a drastic situation requires a drastic remedy

16 hrs.

I hope the hon Minister of Irrigation and Power will rise to the occasion If he does not rise to the occasion, if, God forbid, all the forebodings of the people come out to be true, even partially, even to the extent of ten per cent, I tell you that the people's faith will be shaken in it. Therefore, I would say that it is not only a question of Rs 50 lakhs or Rs 5 crores, it is not a question of the Governor of the State or the Chief Engineer of the State, but it is a question of restoring the faith of the people in the great projects that we have undertaken, and that faith will not be restored by giving us these statements, colourless and lifeless statements, which do not give us any hope, which do not give us any courage to face the future

I would, therefore suggest that something should be done and the whole thing should be put on a war footing and an emergency footing

Shri B C Kamble (Kopargaon) When a calamity falls upon the country, the first thing that we expect to do is to get over the calamity; therefore, we should look at the Bhakra-Nangal dam from that point of view Even though that must be so yet we have a duty to perform as Members of the Opposition, and to be very vigilant about the whole thing It is in that spirit, and with a view to understanding the thing, that I would like to raise certain points

The first point that I would like to raise is this, that when there is a matter like the Mundhra affair, or there is a thing like rising of prices, what happens is that the Minister feels that he has failed and he resigns, or if there are any failures, an inquiry is instituted with regard to those officers who are responsible for it. Therefore, if this matter is to be viewed seriously, I would suggest that the hon Minister should very seriously think about it and tender his resignation, and likewise, even the chairman of the consulting board or control board should submit his resignation accordingly And when the things would be over, then they may be brought in very gracefully, having regard to the finding of the inquiry committee

My second point is this We have been told that there is no damage to the dam, we have been told that the work will go according to the schedule That is all right, but we are also told that they are not able to trace the causes of this mishap Now, the paradox is this, to my mind, it is a paradox How is it that when they do not know the causes of the mishap, they are on surer grounds and they tell this Parliament and also the public that everything is okay and everything will go according to the schedule? How is it that they are saying that there will be no damage to the dam when they do not know anything with regard to the main causes of this mishap? I think the best thing would have been to say that they have not been able to trace the causes, and until that is done, they are not prepared to say anything as to whether the thing is safe or not. But they are going further and they are suggesting to us that along with this repair work, even the construction will go on as if there were no emergency whatever, that is to say, both the things will go on simultaneously. As a matter of fact, the whole attention and the whole energy should be concentrated on that part which relates to the emergency, but that is not happening

[Shri B. C. Kamble]

My hon. friend, Shri Goray, made a reference to coytee blasting. What are the precise consequences of this kind of coytee blasting? Was advice given that there should be milder methods applied? What are the consequences and what is the pressure of water and whether the dam is in a position to bear the pressure of the water? All these things must be revealed to the House. The hon. Member went to the spot. He saw the thing. He should at least have given us details of what he saw himself. That is also not done. The Director himself went to the scene immediately on hearing the news. Very good. He went. He inspected. He must have found certain things with regard to the mishap. At least that information should have been made available to us. But that is not done. There are statements made and from those statements we do not find anything which will enlighten us with regard to the actual position about this mishap.

There is another interesting thing about what we are told with regard to the right diversion tunnel. In this mishap, this tunnel occupies a very important position. It was to be soon plugged. We are also told that the water level has been sufficiently raised, that the level of the dam is sufficiently raised and what they had expected had happened, that is, the inner flow of water also had started. If this was so, we would like to know the precise time when actually the inlet water was going on smoothly. There is a kind of inaccuracy. We are told that this was going on smoothly in the year 1958. If this is so—I concede that immediate steps were taken to plug this tunnel now—why did they wait for such a long time?

The time at my disposal is short and other hon. Members are also desirous of speaking. What I would suggest is that the present Inquiry Board should be completely recast and certain Members of this House should be associated with the inquiry—certain Members from the Opposition should be associated. Also one or two eminent Judges should be associated with this inquiry. Otherwise, how can those engineers and others who are somehow or other responsible or not—I am not going to say anything at this stage—those who are actually working there, institute an inquiry which will be full-fledged and impartial? Therefore, I suggest that inasmuch as grave concern is felt throughout the country—there have been editorial comments and other comments in the newspapers—inasmuch as grave concern is felt by the public at large, there should be a full-fledged inquiry by a fully reconstituted Inquiry Board.

Shri Ajit Singh Sarhadi (Ludhiana): I would not be as pessimistic as many of my hon. friends who have preceded me. The mishap is certainly a very serious matter. It is unfortunate too. But we have the highest appreciation for the engineering staff as well as other service personnel there for the manner in which they have met the situation. They have complete confidence that they will be able to meet the situation. I do not think there is any reason to be panicky; at the same time, we cannot be complacent either. We have to have the realistic picture of the situation. It is not the first mishap. It is the third in the history of the Bhakra Dam and it certainly creates aprehension in the minds of all people about the safety, stability and security of the dam. But my personal feeling is that so far as the safety and stability of the dam is concerned, we need not have any doubt.

I concede that it is premature to say about its stability for the water in the reservoir has not reached its target, nor has the dam gone up to its target. At present the stress and strain on

the dam is only 25 per cent. of what it would be ultimately Therefore, it is too early to say about the safety and stability Yet taking into consideration all the cautions and precautions that we have taken, I am sure the dam would be absolutely safe

But, what I have got aprehensions about is this It may not be safe in the way the Maginot line was safe and may be penetrated in the right flank The engineering officers of the Ministry would appreciate that the right flank is certainly weak I need not go over the history It has been pointed out that it is the right shoulder that had been grouted I may be wrong I believe that the Grouting Chart, when they injected the right shoulder and the left shoulder with cement would show whether the right shoulder is weak or strong where the hoist chamber is, particularly in the light of the fact that we had an accident last time when a rock fell from this very right shoulder I need not go into the details, that is the job of an expert

But one basic fact is obvious that at present the water is in the galleries, passing through the galleries, in the hoist chamber going with all the velocity and force to the gallery through a tunnel which they have made for the purpose of this hoist chamber When it is going with all the velocity what damage it would have done to the rock is one of the points to be considered The fact that the rock is safe cannot be said at present because the pressure of the water in the reservoir has kept it safe But when the water goes down and the rock is open to sun and wind with all the saturation therein, what will be its condition then has to be seen I know that the engineering staff is doing its best But I think it is too early to assess the damage or the loss or even the data. It is for the engineering staff to see I am sure that the Ministry is alive to the situation.

But there is one thing which I want to say I have got the greatest regard for the present advisers, about their capabilities as India's few best men, I have got the greatest regard I saw that before the 24th Shri A N Khosla and Shri Kanwar Sain went and inspected the dam On the 24th the Minister said that it was not possible to state the exact causes of the accident to the hoist chamber

> "This can be done when the mouth of the right tunnel is closed after the level of the reservoir goes down and water is drained from the hoist chamber It is only then that access to it becomes possible"

This may take some months At that time on the 24th August when the statement was made, they definitely came to the conclusion that water would go down and the mouth of the right tunnel would be closed down after level goes down That was what was said on the 24th But they have changed the position now. I feel the apprehension has become real because the galleries are not meant for exigencies of the free flow of water and I believe that to measure the stress and strain in the gallery there must be some instruments embedded in the galleries to understand the seepage, the strength, the strain etc With the water at present level in the reservoir all that would have been washed away by this time and it would have become useless How could they get a correct assessment or measure of the strength of the dam?

These are the points for consideration On the 24th the advice to the Ministry was that the tunnel would be closed only when the water goes down Now they say that the tunnel is going to be closed by a process of flowing boulders from above by some process or other You cannot stop water coming and the rock is getting daily weaker and weaker, because of the velocity of the water coming from the hoist chamber to the galleries. We

[Shri Ajit Singh Sarhadi]

are checking the intake in a limited capacity That is a technical point. The situation is certainly one which, without being panicky but without being complacent also, calls for drastic remedies. It is not a layman's job It is an expert's job. The expert assistance must be obtained Our experts are good. They have done their best But misfortunes have occurred. The point is this What are we to do at this stage? I would request the Minister to take the best advice available, not only in India, but in the world. The note that has been circulated gives the names of foreign consultants and experts who were there in 1953 and before Why should we or our experts stand on formality? Let them have the advice and assistance of the world experts. I agree with Sardar Iqbal Singh, who sponsored this motion We should analyse the situation by hearing further about it. I have regard for Shri Khosla, with all his capability, knowledge and the services he has put in. But he and his colleagues can be witnesses and the Judge can analyse That will be the best solution At the time when England was being attacked a situation arose which Mr Churchill describes in his Memoirs—Third Volume He had different type of intelligence about the German Air Force and he could not come to a conclusion as to how to meet the situation There was the military intelligence. Then there was the aircraft intelligence and two or three other intelligence sources also He appointed Justice Singleton as the Chairman who heard everybody and came to his own conclusions. Later on his conclusions happened to be correct I certainly support Sardar Iqbal Singh We should have a Tribunal with a Judge as its chairman so that it can come to proper conclusions. I do not want to be pessimistic. I have faith. Provided we devote time and look at the problem, we can solve the problem. Take the right flank. Another small dam can also be built. It is a matter of expenditure I submit that the probe should be thorough and independent. It is very unfortunate. I do not in the least doubt the integrity of the people who have been appointed. They are very honest people They are partriots; they are Indians They know that Bhakra has got its own importance in the country and in the world. But the quetion is: how are we to meet the situation? There is no harm done if you have a probe by an independent tribunal. I would suggest that each one of the board of consultants who were there since 1950, should be called and their evidence taken They may be cross-examined by the Judge. Of course, it will take many months before the water goes down I should say that you are meeting the situation very well but we must see that certain things are done

Mr Chairman: The hon. Member's time is up

Shri Ajit Singh Sarhadi: I had been there A gate had been put at 8 O'clock in the morning to stop the water going to the power house I am grateful to the people there who gave us all facilities to see that But when we went there at 11 O'clock along with six others from the Lok Sabha, we were not told that the gate had been washed off. I read that news next morning after we came here to Delhi. I do not say there is concealment. Possibly they thought that we were laymen and so they need not tell us

All the same, Sir, there are certain facts Therefore, I beg with all humility and with all the emphasis at my command that some drastic step will have to be taken. The fate of Punjab is linked up with the Bhakra Dam The future of the Punjab peasants depends on the strength, security and stability of the Dam. The power potential and irrigation potential of the country depend on it. The country's honour is dependent on this. As my hon. friend, Shri D. C. Sharma put it, drastic things will have to be

met with drastic measures. You have a probe by independent people, independent judges and you have the best wishes of the country with you.

Shri Naushir Bharucha (East Khandesh): Mr. Chairman, by now the facts are very clear to our mind and I think certain tentative conclusions can be drawn. I was first shocked to hear that the hoist chamber had collapsed, but I was more shocked when I read the dimensions and the strength of the hoist chamber and I was told that the walls were 7 ft. thick of highly reinforced concrete and that the rocks behind the walls had been grouted under pressure to depths of 30 ft. to 40 ft. It seems very strange, therefore, how a collapse of the kind should have occurred.

The position on 21st August was that the reservoir level was at 1432 ft. The left diversion tunnel had already been blocked and the hoist chamber was being used temporarily to regulate the flow of the right diversion tunnel. The intention was to block this tunnel as soon as the reservoir impounded sufficient water to enable the lower rear outlet at an elevation of 1320 ft. to function. The structural failure occurred as a result of which the galleries as well as the power house have been flooded. The worst part of it is that the generator and the half erected installations have been submerged. We know that electric equipment is particularly allergic to water.

Sir, it seems from the scanty date that has been given to us that from the very start there was a certain lacuna in the designs of the hoist chamber. An emergency gate to seggregate the hoist chamber from the galleries was not provided for. I am surprised why that was not done. No emergency gate of suitable design was provided at a suitable point in the cable galleries against emergency of the power house being flooded. The hoist chamber had only one gate to prevent flooding of the chambers with waters from the right tunnel. No stand-by or emergency duplicate gate was provided not only to meet such emergencies but even for carrying out repairs, if necessary, to the main gate of the hoist chamber. The Minister has got to explain this obvious lacunae in the designs.

Sir, the problem now before the engineers is that they have got first to stop the water gushing into the power house, and to relieve the power house two holes have been blasted in the cable gallery facing the spillway. But still the discharge in the galleries seems to be of the order of 5000 cusecs, which is an exceptionally heavy discharge for galleries which were not intended to hold water. Unless, therefore, the 50 ft. entrance of the tunnel is blocked the water will continue to run into galleries and there will be an eroding action of stones which this deluge brings into galleries and which rush past the galleries.

The issues before the authorities were whether they should block the tunnel and save water for the rabi crop or whether the reservoir should be allowed to be denueded to a level so as to make the operation of blocking the tunnel easier at the cost of the rabi crop. The decision has been taken to maintain a suitable reservoir level and block the tunnel, which cannot be done fully as experts agree. Even after everything is done the water flowing through the tunnel will be of the order of 3000 cusecs which will be quite a volume of water.

As a step in aid a bypass tunnel with an approach tunnel is being constructed. I doubt the soundness of this construction of a bypass tunnel. By the time this bypass tunnel is finished the reservoir level, through normal release of water and intervening dry season, might reduce itself to a level when the work of completely blocking the right tunnel could be

[Shri Naushir Bharucha]

undertaken Therefore, it is very doubtful whether it is worth-while having this by-pass tunnel which will be nearly 1,400 ft long and take nine months to construct We have been told that other measures are being taken such as plugging the damaged hoist chamber which cannot be done for months together

Administrative measures have also been taken such as foreign exchange has been released, procurement procedures have been simplified, priorities have been arranged; additional staff has been sanctioned and the regulation of releases of water has been left to the General Manager who may, if he thinks fit, so release the waters that there would be nothing left for the rabi crop! It almost seems to me that these are panicky measures, though some of the Members have spoken about placing the whole thing on a war-time footing The Minister appears to have abdicated his authority in favour of the experts

What are the reasons for the failure? The experts have closed their mouth Structural failure is admitted Having regard to the 7' thick concrete lining, it is obvious that the failure was due to the constructional material not being according to specifications I think that the cement intended for the hoist chamber has gone elsewhere It is very necessary now to have an exploratory borings and determine the composition of the core of the dam

I want to ask the hon Minister certain questions How long will it take to stop the water flowing into the power house? How long will it take to block the upstream portal of the right diversion tunnel? How long will it take to clear the damage done to the hoist chamber? What hope is there of retrieving the electrical equipment? Such a damage obviously cannot be of the order of Rs 55 lakhs As the hon Mover said, Rs 45 lakhs constitutes the foreign exchange component. Additional salary for another thousand men who will be kept on the job will have to be provided, and the cost of a by-pass tunnel, an approach tunnel and a new hoist chamber will have to be provided The cost of blocking up the upstream portal of the right tunnel would be necessary Additional staff for various directors of the Bhakra Dam is necessary What is more, it will be absolutely impossible to retrieve most of the electrical equipment the value of which runs into crores of rupees That will be practically a dead loss to us.

Shri Narasimhan (Krishnagiri). All told, how much will it come to according to the hon Member's calculation?

Shri Naushir Bharucha: It all depends on how quickly they can stop the water flowing into the power house The policy of the Bhakra administration is to retail to the public bad news of serious losses by instalments so that the public can digest it

As to the rest of it, I agree with the hon Members who have said that the enquiry should be such as to command the confidence of the public A judicial enquiry is necessary and those who are connected either with the administration or management or consultation machinery of the Bhakra Dam should figure only as witnesses

I hope that the Government will at least do something to fix the responsibility and not take this mishap which is a gigantic one as if it is an ordinary routine affair

Dr. Atchmamba (Vijayawada): I have been hearing speeches made here by hon friends Of course, the Bhakra Dam is a great venture of ours and whenever we get foreigners from all over the world we take them to see the dam and we are very proud of it. The disaster that has occurred has certainly shocked us and we are very sorry about it. In fact, we are concerned about the matter, so to say

But what we have to see is this There is no use of running away and frightening the public and make the disaster much worse than what it really is.

First of all, unless we understand something of the technique, we will not clearly understand how difficult it is for the engineers whom we are blaming so much—of course we have also given them praise—to come to a definite conclusion and find a solution There are the right and the left diversion tunnels We have closed the left tunnel but the right tunnel is open We have left it open because while we are constructing the dam—in between we have now come up to about 330 ft or so and we have to go up to 550 ft and before we finish it, we want to give water to the kisans During the construction, we want to give water to them That is one thing Whether we are right or wrong we have to decide later on But it is because of that that we have left the right tunnel open Then, in order to raise the level so that water may be freely given to the kisans, the hoist, the gate and all that are constructed Of course, we have these outlets Otherwise, we would have closed the right tunnel and only let out the water as the dam increases in height Because of this disaster, we have to come to the conclusion that it was not the right thing to do But what we have to see is, how we are going to face this disaster and get over it

We know the tunnel is more than 300 feet deep They have given the information in the report that the hoist chamber is 300 feet below the earth That means the tunnel is much deeper We can imagine water rushing down 300 feet Somebody said the velocity was about 80 miles When the chamber has broken and the water has come up through the galleries into the left side, we can imagine how difficult it is One can understand the velocity and pressure of water, if one sees how Krishna and Godavari cut across the Eastern Ghats When water rushes with such great velocity, it is very difficult even for expert engineers to stop it. They have to think and do something Mr Slocum has been summoned. He is a foreign expert and he is giving advice

Of course, the Ministry is very alive to the situation They have run up and given all the assistance they can possibly give Naturally, they are also very anxious that it should be stopped The electric machines are there and they do want those machines to be damaged So far as getting expert advice from foreign countries is concerned, certainly as and when necessary, it will be done One thing is certain To think that only in our country, in regard to work done by our engineers, such damage has been done is wrong, because the other day I saw in the papers that a whole dam has been washed away in America Not that we should be complacent, but we not at the same time be over-anxious, be frightened and run away I do not want that, because the public are all lay people Most of us are also lay. But when we, the representatives of the people, get so alarmed and it comes in the papers, naturally the people will be much more alarmed, they will not be in a position, as it were, to accept any construction in future This being our first attempt, naturally we are very anxious and frightened. But such disasters and errors have occurred all over the world, whether it is Russia, America or any other country Only they might not have come in the papers or such publicity may not have been possible

Leaving alone that, in the Parliament itself many Members have time in and time out raised the question that foreign assistance has been taken so much more than what is necessary and that we are paying enormous amounts for foreign assistance So, to say that we are not taking foreign assistance is quite wrong On the other hand, our engineers, most of whom have been recognised as inter-

[Dr. Atchmamba]

national experts all over the world, are also looking into this thing. Certainly it will take time. If we are in a hurry and ask, "Why are we not tackling this quickly?", it is very difficult. Suppose there is a doctor attending to a patient suffering from typhoid, with all its complications. If the relations ask the doctor, "Why have you not stopped these complications? Why have not done this or that?" it is not possible, because the disease has to take its course.

Shri C. R. Narasimhan: The patient has got to be patient.

Dr. Atchmamba: The relations also have to be patient. We have to learn two things from this. For any lesson that we have to learn we have to pay. It is costly when we learn such a big thing. The lesson we have to learn is, hereafter for any structure, major or minor, we must have the best engineers and the best intellect. There should be a committee to see the possible difficulties and disasters, why they occur and how we can prevent them. Nowadays medicine is more concentrated on prophylactics. So, here also we have to think more of prophylactics. We have to go into this and take the necessary precautions, so that we may not be troubled further with difficulties in the case of other projects.

Another thing is that we should not press the engineers too much. We cannot tell them: "We are spending so much; so please give us water quickly". If only we have not hurried them, difficulties would not have arisen in the case of the hoist chamber. If only we had a little patience and we had waited till the whole dam work was over, this disaster would not have occurred. If we press the engineers too much, naturally they would be anxious to show results and so they would take recourse to such measures which are not in the best interests of the dam or project. So, we have to be a little patient with our engineers and we have to help them in their work so that they may perform their duties with care.

Another thing which I want to mention is this. This is the first major project that we have taken up. So, instead of thinking of completing it at a stretch we have to do it in stages. For example, the Nagarjunasagar project is being taken up in stages—only when one stage is completed is the other stage taken up. In that case, with the experience that we have gained we will be able to do much better in future. In the end I will say that we should not alarm the public much more than what is necessary and we should see how best we can use this lesson to help improve the work in the matter of other projects in this country.

[MR. DEPUTY-SPEAKER *in the Chair*]

16.36 hrs.

श्री प्रकाश वीर शास्त्री (गुड़गांव) : उपाध्यक्ष जी, भाखड़ा बांध के सम्बन्ध में मैं ने कोई बहुत लम्बा चौड़ा वक्तव्य न देते हुये कुछ आवश्यक सुझाव प्रधानात्मक रूप में सिंचाई मंत्री महोदय के सामने उपस्थित करने हैं ।

भाखड़ा बांध का आकार लगभग इस प्रकार का है जैसाकि एक बोतल का होता है । गोबिन्द सागर जलागार के बन जाने के बाद जहां से पानी निकलने का द्वार है वह स्थान छोटा सा है जिससे उसकी स्थिति बोतल के समान हो गई है । और उसी के दबाव के परिणामस्वरूप यह दुर्घटना हुई है ।

इस सम्बन्ध में जो विशेष बात मैं माननीय सिंचाई मंत्री महोदय से निवेदन करना चाहता हूं वह यह है कि इस हाउस में यह चर्चा चलने से पूर्व ही सारा पत्र व्यवहार मिस्टर स्लोकम का संसद् सदस्यों के सामने आना चाहिये। जब से उन्होंने इस दायित्व को अपने कंधों पर लिया तब से बीच बीच में जो उनका पत्र व्यवहार गवर्नर, प्रधान मंत्री या पंजाब के सिंचाई मंत्री से हुआ, उन्होंने उनको जो पत्र लिखे और जो आदेश समय समय पर दिये उन सबको सदन के सामने अवश्य आना

चाहिये जिससे कि पता चल सके कि मिस्टर स्लोकम की बीच बीच में क्या क्या सम्मतियां थीं जिनके न मानने के कारण यह भयकर दुर्घटना हुई है ।

दूसरी चीज यह है कि मिस्टर स्लोकम जो इस योजना के चीफ कसल्टिंग इजिनियर हैं इस दुर्घटना के सम्बन्ध में उनका कोई वक्तव्य समाचार पत्रो मे नही आया है यद्यपि और कई वक्तव्य इस सम्बन्ध मे समाचार पत्रो मे प्रकाशित हो चुके हैं । जब मिस्टर स्लोकम सबसे मुख्य परामर्श-दाता थे तो उनका वक्तव्य ससद सदस्यो के सामने अवश्य आना चाहिये था जिससे यह जानकारी प्राप्त हो सकती कि इस दुर्घटना के मूल में क्या कारण है और किस प्रकार से यह दुर्घटना घटी ।

तीसरी बात जिसको मैं विशेष रूप से उपस्थित करना चाहता हू वह उन निरीह मजदूरो के सम्बन्ध में है जिनकी जाने इस दुर्घटना मे गई । जब कि यह दुघटना होन वाली थी उससे पहले वहा के इजिनियरो को भान हो गया था कि पानी रिसने लगा है और खतरनाक स्थिति पैदा हो गई थी जिसके कारण जो ४०० मजदूरो का शिफ्ट काम कर रहा था उसको हटा लिया गया था । केवल एक ओवरसियर और दस मजदूरो की वहा पर ड्यूटी लगा दी गई थी ताकि वे समय समय पर सूचना देते रहे कि क्या स्थिति हो रही है । सबसे बडे आश्चर्य की बात तो यह है कि एक ओवरसियर की टकनिकल योग्यता ही कितनी होती है कि जिसके आधार पर वह यह जानकारी दे सकता था कि किस प्रकार से अब बाध धीरे धीरे खतरनाक स्थिति में चलता जा रहा है । इसका परिणाम यह हुआ कि वह लोग ड्यूटी पर तैनात रहे और उनका बलिदान हो गया । हमको उनकी सराहना करनी चाहिये और उनको शाबाश कहना चाहिये क्योकि व लोग मौत को सामने आते देख कर भी अपने दायित्व से पीछे नहीं हटे । मुझे इस बात को कहने में कोई सकोच नही है कि जिस तरह से भारतीय सेना में कभी कभी लोगों को अशोक चक्र और परम वीर चक्र प्रदान किये जाते हैं, उसी प्रकार जो लोग इस प्रकार के निर्माण कार्यों में अपनी जान को खतरे में डाल कर भी काम करते हैं और अपना बलिदान तक कर देते हैं उनको भी परमवीर चक्र और अशोक चक्र प्रदान किये जाने चाहिये । वहा पर जो ये दस मजदूर मरे हैं इसकी जिम्मेदारी वहा के जो जनरल मनेजर हैं और कस्ट्रक्शन के डाइरेक्टर हैं वे नही बच सकते । जब उन को पहले पता लग गया था कि वहा दुर्घटना होने वाली है, तो उन निरीह दस मजदूरो और एक ओवरसीयर को, जिन की योग्यता बहुत सीमित थी, सारा दायित्व सौंप कर बाकी सब क्यो हट गये, इस बारे में आवश्यक जानकारी इस सदन को अवश्य मिलनी चाहिये । मेरा विश्वास है कि सरकार ने जो एन्क्वायरी कमेटी नियुक्त की है, वह इस सम्बन्ध में भी एन्क्वायरी करेगी कि क्यो इतनी छोटी योग्यता के व्यक्तियो को इस खतरनाक प्वायट पर रखा गया और कोई दूसरा अधिक योग्यता वाला बडा अधिकारी वहां पर उपस्थित क्यो नही रहा ।

सरकार का कहना है कि दुर्घटना के परिणामस्वरूप केवल पचास लाख रुपये का नुकसान हुआ है । लेकिन अभी कुछ दिन पहले पजाब के प्रमुख समाचार पत्र "ट्रिब्यून" मे, जो कि अम्बाला में छपता है, मुखपृष्ठ पर बार्डर दे कर किसी एक व्यक्ति ने, जिस ने अपने नाम को प्रकट नहीं किया है, यह समाचार दिया है कि मै भाखड़ा बाध से सम्बन्धित एक निकटतम व्यक्ति हू और मैं जान-बूझ कर अपना नाम नही देना चाहता हू, लेकिन मै विश्वास के साथ कहता हू कि इस बांध में अब तक जो हानि

[श्री प्रकाश वीर शास्त्री]

हुई है, उस की पूर्ति के सम्बन्ध में सरकार को कम से कम नौ करोड़ रुपये का नुकसान हुआ है। उस ने इस प्रकार की सम्मति दी है। अगर थोड़ी देर के लिये यह सोचा भी जाये कि यह उस की अपनी निजी सम्मति होगी और यह पता नहीं कि वह कोई टेक्निकल हैंड है या नहीं और चूंकि उसका नाम सामने नहीं आया है, इसलिये उसकी सम्मति पर अधिकृत रूप से विचार नहीं किया जा सकता है, लेकिन इस पर विचार अवश्य करना चाहिये कि बांध को जिस समय बनना था और पावर-हाउस को जिस समय चालू होना था, वह उस समय नहीं हो सकेगा। वह इससे पीछे हट गया है। अगर नियत समय पर उस को चालू करना चाहेंगे, तो मजदूरों की संख्या बढ़ानी पड़ेगी, कार्यशक्ति को बढाना पड़ेगा। लेकिन उस के साथ ही सब से बड़ी बात यह है कि अगर इन मजदूरों को और एक ओवरसियर को, जिन की मृत्यु हुई है, किसी प्रकार से विशेष सहायता न दी गई, तो जो मजदूर आगे वहां पर काम करने वाले हैं, उन के होसले टूट जायेंगे, उन की हिम्मत समाप्त हो जायेगी। इस लिये मेरा कहना यह है कि उनको आर्थिक सहायता देने के अतिरिक्त भी जो इस प्रकार के सम्मानित पदक या पुरस्कार होते हैं, वे भाखड़ा के इन मजदूरों के लिये अवश्य आने चाहिए। जबकि विश्व का एक बड़ा बांध बन रहा है और उस में जिन लोगों ने अपना बलिदान दिया है, उन की स्मृति में केवल पत्थर लगाने से कि भाखड़ा बांध के निर्माण में जो लोग शहीद हुये उन वीरों की स्मृति में यह स्मारक स्थापित किया जा रहा है, सरकार को संतोष नहीं हो जाना चाहिये।

एन्क्वायरी कमेटी के सम्बन्ध में मैं एक आवश्यक बात यह कहना चाहता हूं कि भारत के जो इंजीनियर भाखड़ा बांध पर काम कर रहे हैं, हम को उन की कार्यशक्ति की सराहना करनी चाहिये, लेकिन जैसा कि अभी पंजाब के सदस्यों ने आपके सामने यह उपस्थित किया है, जिस से कि मैं सर्वांश में सहमत हूं, यह भाखड़ा बांध जो विश्व का इतना बड़ा बांध बनने जा रहा है, अगर कल को उस पर किसी प्रकार की दुर्घटना होती है, तो पंजाब प्रांत को तो खतरा होगा ही, बल्कि भारत को भी बड़ा संकट उपस्थित हो जायगा और हमारी अरबों की सम्पत्ति पानी में बह जायगी और न जाने किस किस प्रकार के संकट पैदा हो जायेंगे। हमारे बगल में पाकिस्तान छोटा सा देश है, जो कल तक हमारा ही भाग था। उस में इस समय दो बांध बन रहे हैं। एक बांध तो वह है, जिसके बारे में हमारी सरकार विरोध कर रही है, लेकिन उस विरोध के बावजूद जिस का काम विधिवत् चल रहा है, और वह है मंगला बांध। उस के लिये १४० करोड़ रुपये का टेंडर निकाला गया और विदेशों के लोगों को निमंत्रण दिया गया कि वे आयें और इस बांध को बनायें। बड़े अच्छे और कुशल इंजीनियर विदेशों से आये हैं। दूसरा बांध वारसिक बांध है, जिस पर ५०० कैनेडियन काम कर रहे हैं। मेरे कहने का यह अभिप्राय कदापि न समझ लिया जाये कि भारतीय इंजीनियरों की योग्यता में, या उन की नीयत में मैं सन्देह कर रहा हूं, जो कि भाखड़ा बांध पर काम कर रहे हैं। लेकिन मैं यह अवश्य कहूंगा कि परीक्षणात्मक दृष्टि से उन के हाथ इतने अनुभवी नहीं हैं, जितने कि विदेशियों के हो सकते हैं। मि० स्लोकम पहले डायरेक्टर आफ कन्स्ट्रक्शन बनाये गये थे। कुछ साल बाद क्या आवश्यकता पड़ी कि उनको केवल चीफ़ कन्सलटेटिव आफ़िसर

बना कर रख दिया गया और बीच बीच में उन की जो सम्मतियां आती रहीं, उनकी उपेक्षा की जाती रही, जिस का परिणाम यह हुआ कि वह उधर से उपेक्षित और उदासीन होते चले गये । मैंने इसी लिये कहा है कि जब से मि० स्लोकम डायरेक्टर के रूप में नियुक्त हुये थे, तब से आज तक का उन का सारा पत्र-व्यवहार गवर्नमेंट को प्रकाशित करना चाहिये, जिससे सदस्यों को पता लग सके कि स्थिति क्या है और कहां कमजोरी हुई, जिस के कारण इस प्रकार की दुर्घटना हुई ।

वहां पर एक विस्फोट भी हुआ था, जिस में नब्बे टन बारूद और दूसरा पाउडर था । उस विस्फोट के बारे में यहां पर अभी चर्चा की गई है । उस के सम्बन्ध मे स्लोकम साहब की क्या सम्मति थी, वह भी सदन के सम्मुख आनी चाहिये । मेरा यह निश्चित विश्वास है कि हमारे सिंचाई मंत्री, श्री हाफ़िज जी अथवा श्री हाथी, इस बात को प्रकट करेंगे कि इस विस्फोट के बारे में मि० स्लोकम की क्या सम्मति थी । इस भयंकर विस्फोट के सम्बन्ध में इस सदन में चर्चा चली थी कि उस से बांध की बुनियादें हिल गई हैं । वे हिल गई हों या न हिली हों, लेकिन इतना अवश्य हुआ कि उस पहाड़ के ज्वायट्स, जोड़ हिल गये, जिस में यह दुर्घटना घटी है, हालांकि उस के लिये फिर इन्जेक्शन लगाये गये, उस में सीमेंट भरा गया, लेकिन जो स्वाभाविक मजबूती होती है, उस विस्फोट के बाद वह नहीं रही । इस का एक बहुत बड़ा प्रमाण यह है कि आज से लगभग डेढ़ साल पहले जहां ब्लास्टिंग हुआ था, वहां तीन हजार क्यूबिक फ़ीट की चट्टान फिसल कर नीचे गिरी । आप को यह पता होगा । समाचार पत्रों में यह बात आई थी । इस ब्लास्टिंग ने यह स्थिति पैदा कर दी और अब सुना जा रहा है कि उस को रोकने के लिये एक साइड टनेल उसी पहाड़ से निकाली जायगी । जब वह पहाड़ इतना कमजोर हो गया है, तो जो साइड टनेल निकाली जायगी, जिस से पानी रिस रिस कर जायगा, जो कि पन्द्रह फ़ीट वर्गाकार की होगी, मेरा अपना अनुमान है कि उस से और भी कमजोरी आती जायगी ।

जो घटना घटी है, उस के सम्बन्ध में अपने वक्तव्य को उपसंहार की ओर ले जाते हुये मैं कुछ सुझाव देना चाहता हूं । जो एन्क्वायरी कमेटी रखी गई है, उस के सम्बंध में मेरा सुझाव यह है कि उस में भारतवर्ष के प्रमुख प्रमुख इंजीनियरों के अतिरिक्त विदेशों के दो इंजीनियर अवश्य जायें, जो कि निष्पक्ष रूप से जांच कर के अपनी राय इस सदन और सरकार को दे सकें । इस समय जो जांच कमेटी है, उस पर हमको सन्देह है कि वह निष्पक्ष रूप से जांच कर सकेगी या नहीं । मजदूरों के सम्बन्ध में मैं ने अभी आप से निवेदन किया है । अन्त में मैं कुछ पावर हाउस की मशीनों के सम्बन्ध में कहना चाहता हूं जो कि वहां पर पानी में डूबी हुई पड़ी हैं वे इतनी नाजुक मशीनें है कि जिन के बारे मे इंजीनियर-टैक्निकल हैंड—अच्छी तरह से जानते है कि पावर हाउस की मशीनों को ओस की बून्द से भी बचाना चाहिये । जो मशीनें ओस की बून्दों से बचाई जाती हैं, वे महीनों से पानी में डूबी पड़ी हैं और हम निश्चिन्तता के साथ यहां कह रहे हैं कि उन पर ग्रीस लगाई जा रही है, उन को सम्भाला जा रहा है और पानी एकदम हट जायगा । यह उपहास की सी बात है । मेरा विशेष निवेदन है कि मि० स्लोकम के सारे पत्रव्यवहार को प्रकाशित किया जाय, और जो उन्होंने आज तक समय समय पर निर्देश दिये हैं, उनको भी प्रकाशित किया जाये । दुर्घटना के सम्बन्ध में भाखड़ा बांध के चीफ़

[श्री प्रकाश वीर शास्त्री]

कन्सल्टेटिव आफिसर मि० स्लोकम की सम्मति प्रकाशित की जाये । जो जो जांच सम्मति बनी है, उस में बाहर के दो इंजीनियर भी रखे जायें, ताकि वह समिति निष्पक्ष रूप से अपनी राय दे और फिर उस पर इस सदन में विचार हो ।

Shri Karni Singhji (Bikaner): The tragedy of the Bhakra dam is indeed a great one, and, no matter what may be said, the gravity of the situation cannot be minimised. To North India, in particular Punjab and Rajasthan, this bad news is a very great setback and disappointment as we depend on the Bhakra for both our irrigation and power supply.

A great deal has been said about the reasons and the causes for this mishap. But I am quite sure that there are other fundamental underlying causes which we have to try and find out; and in my humble opinion one of the causes is the corruption that prevails in our Public Works Departments. I need hardly say, Sir, that the corruption which today has gone to undermine everything in our country and has become a national failing is a thing which we have to put right first and foremost. You do not have to go very far to see that all these new roads we are making today require repairs at the end of the year. You build lovely new buildings, but they are leaking even before you occupy them. Obviously, it proves that there is something fundamentally wrong. I would like to know how much of the cement and other good material that has been allocated for Bhakra and for which the nation has been paying has gone into building the homes of other people who had no right to use them. I have no doubt, Sir, if we follow the suggestion of our friend here, that when we have the enquiry if one or two outside people are also associated with it we will find out many new things as to why this happened. There may be many a skeleton in the cupboard which an enquiry of our own local officers may not be able to find.

I would also like to know why we are hesitating to give Mr. Slocum, who is supposed to be an authority, full powers to go into this matter. Your inquiries may reveal anything, but one thing is a fact that India is a country which is growing fast, and we shall depend on our construction and our P.W.D.'s and our materials to build up this great nation; and if such a tremendous amount of corruption is there, we shall never be able to build up a great country.

We talk about three losses; Bhakra dam is only an episode in our country. I only hope that we shall be able to take stock of the situation and pull ourselves together and do something about it, because this may not be the last one. What has happened is bad enough, but the question now is how we are going to prevent more such Bhakra-dam-type scandals.

पंडित ठाकुर दास भार्गव : जनाब डिप्टी स्पीकर साहब, मैं समझता हूं कि आज के दिन हमारे चालीस साल की उम्मीदों पर पानी फिर गया है। इस डैम के बारे में चौधरी रणवीर सिंह कहते हैं कि वह बच्चे थे जब से सुनते थे—मैं जब से जवान हुआ तब से इसका झगड़ा करता आया हूं । और मैं कह सकता हूं कि पिछले चालीस बरस में जितनी मैंने अकेले कोशिश की है शायद किसी ने की हो । मैं इसकी हिस्ट्री में जाना नहीं चाहता हूं और न यह उसमें जाने का मौका है । लेकिन मैं अर्ज करना चाहता हूं कि भाखड़ा डैम खास तौर पर हिसार जिले के वास्ते बनाया गया था, उसके वास्ते इसके बनाने की तजवीज थी और वह भी इसलिये कि वहां पर हर तीसरे साल कहत पड़ता है और उस कहत से बचने के लिये जरूरी था कि वहां पानी दिया जाये । चुनांचे जितनी इसकी इरीगेशन केपेस्टी है उसमें से २६ लाख एकड़ खास हिसार के अन्दर है, वह ऐसा एरिया है

कि जिस को सेराब करना था। हम लोग कितने इस गवर्नमेंट के और अपने इंजीनियर्स के शुक्रगुजार हैं इसका कोई ठिकाना ही नहीं। जब पहली बार पानी हिसार जिले में गया तो लोग उसी तरह से छलांगें लगाने लग गये जिस तरह से कि बरसात के दिनों में बछड़ा अपनी पूंछ उठाकर छलांगें लगाता फिरता है। इसी तरह से लोगों ने वहां छलांगे लगाईं। इस कदर वहां के लोग खुश थे कि कुछ ठिकाना ही नहीं। मैं अर्ज करना चाहता हूं कि शायद कोई और नैशनल कलेमिटी, इतनी जबर्दस्त कलेमिटी पहले कभी नहीं हुई जितनी कि भाखड़ा डैम पर जो मौजदा हादसा हुआ है, उससे हुई है और लोगों के दिलों में सन्देह पैदा हो गया है। आप अन्दाजा नहीं लगा सकते हैं कि हर एक होम में जहां कहीं भी हम जाते हैं आज क्या हालत है। वे लोग डरे हुये हैं और समझते हैं कि बात उनसे छिपाई जा रही है, जो असली चीज है उसको छिपाया जा रहा है और इस डैम को नुकसान पहुंचा है। यह एक आम ख्याल है। अगर उनको यह विश्वास दिलाया जा सके कि असली डैम को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है तो यह बड़ा रि-एश्योरिंग होगा। आप कहते हैं कि ५५ लाख का नुकसान हुआ है। मैं समझता हूं कि अगर इससे ज्यादा या पांच या सात करोड़ का भी नुकसान हुआ है, तो भी यह इतनी मैटीरियल बात नहीं है। जो मैटीरियल बात है वह यह है कि कहीं डैम ही खत्म न हो जाये और जो आन्इदा प्रासपैरिटी आने वाली है, वह ही कहीं खत्म न हो जाये। मैं समझता हूं कि अगर डैम को कोई नुकसान नहीं पहुंचा है तो इतने घबराने की यह बात नहीं है।

अब कहा गया है कि एक इन्क्वायरी कमेटी बिठाई गई है। आप कोई भी कमेटी बिठायें, हमारा तजुर्बा बतलाता है कि इस तरह से कुछ होने वाला नहीं है। हमने देख लिया है कि एल० आई० सी० में जो स्कैंडल हुआ था और जिसमें देश का दस लाख रुपया या उससे भी अधिक रुपया बरबाद हुआ था और किस तरह से देश का जो कानून था उसकी बेहुरमती की गई, लेकिन उसका भी कोई नतीजा नहीं निकला। इसका भी कोई नतीजा नहीं निकलने वाला है और न किसी शख्स के खिलाफ कुछ होने वाला है। आप कमेटी बिठायें या न बिठायें लेकिन मैं पूछना चाहता हूं कि पानी को रोकने के लिये आप क्या कर रहे हैं। २१ जून से लेकर आज तक आप पानी को रोक नहीं पाये हैं। टनल में उसी तरह से पानी भरता जा रहा है। ५,००० क्यूसेक पानी जो जमीन के ३०० फीट नीचे चला गया है उसके बावजूद भी आप कहते हैं कि डैम सेफ है, यह ऐसी बात है जिस पर यकीन नहीं किया जा सकता है। हम कोई इंजीनियर नहीं हैं। हम तो लेमैन हैं। लेमैन की हैसियत से हम नहीं समझ पाये हैं जब आप यह कहते हैं कि कि होयस्ट चैम्बर की छत अभी तक कायम है। आप हमको रिएशोर करते हैं लेकिन हमारा जो शुबहा है वह बढ़ता ही जाता है। आप कहते हैं कि छोटी छोटी मशीनरी को निकाल लिया गया है। मैं कहता हूं कि आप इन चीजों को जो छोटी छोटी हैं, छोड़ दें, आप मशीनरी निकालें या न निकालें जो असली चीज है वह यह है कि न आप पानी बन्द कर सके हैं और न ही लोगों को यकीन दिला सके हैं कि दरअसल में जो सबस्टेंस डैम है वह ठीक है।

आज लोग शिकायत करते हैं कि इसकी मियाद को, इस डैम को बनाने की मियाद को डेढ़ बरस, दो बरस या इससे भी अधिक बढ़ा दिया गया। मैं आपको बतलाना चाहता हूं कि यह जो स्कीम थी यह सन् १९२२ में शुरू हुई है। तब कहा गया था कि यह आने वाला है। १९४७ में हम नेहरू जी की खिदमत में पेश हुये और उन्होंने हमें कहा कि डैम १९५१ तक बन जायेगा। वह साल गुजरा १९५२ गुजरा १९५४ गुजरा, पानी के साथ साथ बिजली की बात भी उसके साथ जोड़ दी गई। इस तरह से वक्त गुजरता चला गया

[पण्डित ठाकुर दास भार्गव]

और अब १९५९ में यह पक्की बात थी कि दुगुना पानी मिल जायेगा । अब यह १९६० हुआ, १९६१ हुआ । मै कहता हू आप १९६२ कर दीजिये । लेकिन आप साफ साफ बतायें कि मामला क्या है ।

मेरे दोस्त ने एक दो वाकात् आपके सामने रखे हैं । मैं भी एक वाका आपके सामने रखना चाहता हू । आपने हुक्म दिया कि जिला हिसार में फला दिन पानी आयेगा । लोग खुशिया मनाने लग गये । एक जगह से जहा पानी आना था, वहा पर एक बडा साइफिन बना था, जिसमें से पानी गुजरता था, वह सारी की सारी बैठ गई और इसकी वजह यह थी कि आपके इजीनियर्स ने वहा पर सिमेंट के बजाय मिट्टी लगा दी थी । इसकी वजह से दस दिन तक काम ठप्प रहा, काम डिले हो गया । यही एक वाकया नहीं है । मैं एक और वाकया बयान करना चाहता हू । जिला हिसार मे सिमेंट के मकान नहीं बनते थे । आज वहा पर आप जा कर देखें तो पता चलेगा कि कितने ही सिमेंट के मकान खडे हो चुके है । इसका क्या वजह है ? इसकी वजह यह है कि वहा पर आपके कर्मचारियों व ठेकेदारों ने सिमेंट बेचा है जिसको लोगों ने खरीदा और मकान खडे कर लिये और आपके लोगों ने सिमेंट की जगह पर मिट्टी लगा दी । कई सौ बोरे इस तरह से बेचे गये । इजीनियर्स की ही बात नहीं, बडे से बडे मैम्बर्स के बारे में यहा पर इस हाउस मे कहा गया, मिनिस्टर्स की बाबत यहा कहा गया, एक करोड रुपये के गबन की बात की गई लेकिन किसी ने कोई परवा नहीं की । मामला खत्म कर दिया गया । अव्वल दर्जे का कारप्शन हुई और इतना खर्च किया गया जिसका कोई ठिकाना ही नहीं । खैर जो हुआ सो हुआ । लेकिन आज के दिन जब तक आप एशोअर न कर दें कि डैम साउंड है लोगो को तसल्ली नहीं हो सकती, हिसार के गरीब लोगों को सन्तोष नहीं हो सकता है । आपने इन्क्वायरी कमेटी बिठाई है और मैं समझता हू कि एल० आई० सी० की तरह से ही इससे कुछ नतीजा नहीं निकलेगा, किसी पर रिस्पांसिबिलिटी फिक्स नहीं हो सकेगी । मैं इस बात में यकीन नहीं करता हू कि आपके जो बडे बडे इजीनियर्स है, मि० खोसला है, मि० सेन है, उनमें से कोई भी ऐसा शख्स है जोकि देश का नुकसान करना चाहता हो । कोई भी नहीं चाहता कि देश का नुकसान हो । मुझे अपने इजीनियर्स पर पूरा भरोसा है, बेहद एतबार है । एक बार मौका आया था और मैंने हीराकुड और दामोदर वैली को भी स्टडी किया था वहा पर मैंने देखा कि आपके अपने ही इजीनियर्स मे, हिन्दुस्तान के इजीनियर्स में ही झगडा हो गया जिस के नतीजे के तौर पर बाहर से इजीनियर्स को मगाना पडा । बडी भारी तनख्वाह उनको दी गई । सारा क्रेडिट उस चीज का उनको गया । यह भी इजीनियर्स का काम है । हमारे इजीनियर्स भी इसको अच्छी तरह से कर सकते हैं । लेकिन मैं समझता हू कि आज हमको अपने पर शायद यकीन कम हो गया । इस वास्ते मैं अर्ज करना चाहता हू कि कितना भी खर्चा हो, आप बाहर से स्लोकम से भी बढ़िया किसी आदमी को मगाये बैस्ट इजीनियर को मगाये लेकिन एक बार आप जरूर इस डैम की साउंडनैस का आप टैस्ट करवा दे । अगर एक बार डैम के अन्दर पानी जाना शुरू हो गया और डैम का कोई नुकसान पहुचा तो मैं समझता हू कि यह इतना भारी नुकसान होगा कि जो बयान नहीं किया जा सकता है । आपका १७० करोड रुपया जाया हो जायेगा । खैर उस रुपये का तो आप टैक्स लगा कर लोगो से वसूल कर लेंगे । लेकिन जो हजारों करोडो आदमियो का सत्यानाश हो जायेगा, इलाकों के इलाकों का सत्यानाश हो जायगा उसे कितने ही बरसो तक हम उसको पूरा नहीं कर सकेंगे । इस वास्ते सब से पहली चीज यह

है कि वर्ल्ड के बैस्ट एक्सपर्ट्स को बुला कर इस बात की तसल्ली करें कि आया जो डैम है यह साउंड है या नहीं है। अगर इसके अन्दर कोई कमी है तो आप शरमायें नहीं कि लोग क्या कहेंगे लेकिन बात को साफ तौर से लोगों को बतायें और जो असली चीज है उसे उनके सामने रखें। आप सब से पहले इस तरफ तवज्जह दें कि डैम साउंड है या नहीं। अगर इस चीज को आप कनफर्म कर ले तो हम सब बातों को भूल जायेंगे। लेकिन हम इसको बरदाश्त नहीं कर सकते कि डैम खत्म हो जाय और इस तरह से न सिर्फ रुपया खाया जाय बल्कि सारा कुछ ही खत्म हो जाय।

जहां तक बैटरमेंट फीस का सवाल है, उसके बारे में मैं इतना कहना चाहता हूं कि आप इतनी शर्म तो करें कि आप जो बैटरमेंट फी के तौर पर मांग रहे हैं उसे देने को हम तैयार हैं। हमने कभी भी इस पर एतराज नहीं किया। अगर एतराज करने की बात हो तो पचासियों तरह के एतराज उठाये जा सकते हैं। लेकिन कभी भी कोई एतराज नहीं उठाया गया है। हम पंजाब की साख को बनाये रखना चाहते हैं। पंजाब गवर्नमेंट ने जो रुपया आपको देना है, हम चाहते हैं कि वह उसे आपको अदा कर दे। हम किसी तरह की हुज्जत नहीं करते। लेकिन किस मुंह से आप रुपया मांगेंगे जबकि आपने सिमेंट की जगह पर मिट्टी लगाई और जो इंजीनियर्स थे वे आपस में लड़ते रहे और साथ ही साथ आज के दिन वह काम जो पूरा होना था पूरा नहीं हो सका। मैं किसी को दोष नहीं देता। दोष दूं भी किस को। हमारे जो मिनिस्टर साहिब इस महकमे में हैं, रोज तबदील होते रहते हैं और हर एक मिनिस्टर पूरी कोशिश करता है, इंजीनियर्स पूरी कोशिश करते हैं। लेकिन जो हुआ है वह अनफार्चुनेट है जिसके वास्ते किसी को जिम्मेदार ठहराना मुश्किल है। अब जब ऐसी मुसीबत पड़ी, नैशनल डिजास्टर पड़ा, उसको हम देखें। जो नुकसान हुआ वह सरीहन गफलत से हुआ। यह सब है, लेकिन इस वक्त जो बात आपको सोचनी है वह यह है कि आप किस तरह से पहले इस पानी को बन्द कर सकेंगे। अगर यह पानी बन्द नहीं हुआ, जैसा कि आज मुझे जल्द बन्द होता हुआ नजर नहीं आता, तो मुझे डर है कि इतना नुकसान होगा जिसका हमें आज ध्यान नहीं है।

17 hrs.

दूसरी बात मैं यह कहना चाहता हूं कि अगर इस डैम को कायम रखने में हम कामयाब भी हुये तो जैसा कि चीफ इंजीनियर का कहना है, कम से कम छः महीने तक होयस्ट चैम्बर तक नहीं जाया जा सकता और जब तक वहां जाया नहीं जा सकता तब तक पता नहीं लगाया जा सकता कि किस का कुसूर था। जो एन्क्वायरी कमेटी बैठेगी वह पता भी लगा ले तो सवाल हो जायगा कि यह एक एरर आफ जजमेंट थी। इसलिये जो एन्क्वायरी की बात कही जाती है मैं उसके कोई हक में नहीं हूं। मैं इस हक में हूं कि जैसे भी हो सके इस पानी को सबकी कोशिश से बन्द किया जाय। इस से डैम ठीक रहेगा और मजीद नुक्सान नहीं होगा। लेकिन इसके साथ साथ मैं यह भी अर्ज करना चाहता हूं कि बराय मेहरबानी जरा उन गरीबों पर तो रहम कीजिये, जिन से आप बैटरमेंट लेवी लेना चाहते हैं, जिन की प्रास्पेरिटी खत्म हो चुकी है। मैं समझता हूं कि पंजाब आज ऐसा सूबा है जिसमें सब से कम इंडस्ट्रीज हैं। राजस्थान भी हमारे साथ का ही एक सूबा है। वह हमारे साथ लगा हुआ है। बदकिस्मती से वह भी हम से अच्छा नहीं है। जिस सूबे के अन्दर इतनी इंडस्ट्रीज हों, उस सूबे के अन्दर बिजली की इतनी कमी हो जाय, बिजली का सारा सिस्टम खत्म हो जाय यह एक नैशनल डिजास्टर है। इसलिये मैं गवर्नमेंट की खिदमत में अर्ज करूंगा कि जहां तक बैटरमेंट लेवी का सवाल है उस में मेहरबानी करके थोड़ी सी रियायत दीजिये। आज वहां के लोगों का इतना नुक्सान हुआ है जिसकी

[पंडित ठाकुर दास भार्गव]

इन्तहा नहीं है । जो कुछ पंजाब के लिये एलोकेशन हुआ है, उसका जो नुक्सान हो रहा है, मैं उसको जिम्मेदारी किसी खास आदमी पर नहीं रखता । बदकिस्मती हमारी है, लेकिन यह आप के सोचने के काबिल चीज है कि जिस प्रांविस को इतना नुकसान हुआ है उसका आप कुछ तो ख्याल कीजिये ।

चौ० प्र० सि० दौलता (झज्जर) जनाब डिप्टी स्पीकर साहब, यह डैम जो दुनिया का मजूबा है, हिन्दुस्तान की शान है और पंजाब और राजस्थान की जान है, आज एक मुसीबत का शिकार है । दुरुस्त है कि यह मुसीबत एक नैशनल कैलेमिटी है, मुल्की नुकसान है । लेकिन पंजाब के लोगो के लिये यह जिन्दगी और मौत का सवाल है । मुझे २३ बरस पहले का वह दिन याद है जब मेरे सयासी गुरु मरहूम चौधरी छोटू राम बिलासपुर के महाराजा से मिलने के लिये गये । इसलिये कि महाराजा बिलासपुर ने कहा कि मैं अंग्रेजी इल्के मे दाखिल नही हूंगा और चौधरी छोटू राम ने कहा कि मैं बिलासपुर के इल्के में हरगिज नही जाऊंगा, और इस नदी के बीच मे बैठकर यह तय हुआ कि पंजाब के इस डैम के लिये महाराजा बिलासपुर कैसे जमीन दे । मै उस दिन दस्तखत के वक्त मौजूद था । सब से पहले भाखरा के लिये दस्तखत यूनाइटेड पंजाब की मिनिस्ट्री ने दिये थे । ६ जनवरी, १६४५ को मरहूम सर छोटू राम की डेथ हुई और ८ जनवरी, १६४५ को, भाखरा की फाइल को आप देख सकते है, उनके दस्तखत है । दस्तखत करते ही पंजाब की उस बडी आत्मा ने कहा, "अब हे मालिक, चाहे उठा लो, मै अपना फर्ज पूरा कर चुका ।" मुझे दुख है कि वह अभागा डैम आज टूटा है । इस वक्त भाखरा नही टूटा, लोगो का विश्वास टूट गया हम सब से । यह किसी पार्टी या किसी तगदिली का सवाल नहीं है, लेकिन जो भी यहा के हुक्मरा साहबे एक्तदार कहलाते हैं, उनमें जनता का विश्वास सब से उठ गया, चाहे वह इधर के बैठने वाले हों या उधर के बैठने वाले हों । यह एक ऐसा हंगामा है जिस को महज मजाकिया इटरप्शन्स से एक कामन चीज नहीं समझा जा सकता । अगर हमारी कोई मैच्योर्ड नेशन होती तो आज तक मिनिस्टर साहब ने इस्तीफा दे दिया होता । खुद जो कंट्रोलर है, जो मालिक है, जो जिम्मेदार है, वह अपना रेजिग्नेशन देते, अगर हम मैच्योर्ड नेशन होते । हमें मालूम है कि इस हगामे को हमने उस सजीदगी से नही लिया जिस सजीदगी से हमे इसे लेना चाहिये था । बहरहाल मै इस बात में न जाते हुये अर्ज करना चाहता हू कि जो बयानात मोहतरम वजीर साहब की तरफ से आने रखे वह बिल्कुल नातसल्लीबख्श है हिन्दुस्तानी, पंजाबी, राजस्थानी और तमाम लोगो के लिये । जो जरूरी सवालात है उनमे से एक का भी जवाब नही है इन बयानात मे । हम साफ साफ जानना चाहते है कि यह डैम टूटा क्यो । नही बताया जाता । डैम का टूटना हमारी बदनसीबी है, लेकिन उससे बडी बदनसीबी यह है कि हमारे इजीनियर और हमारे हुक्मरा यह न जाने कि यह डैम टूटा क्यो ।

कुछ माननीय सदस्य : डैम नही टूटा ।

चौ० प्र० सि० दौलता : मै हैरान हू । मैं २३ साल से इस चीज को देखता रहा हू । कोई गलतफहमी में न रहे । जब पहली दीवार गिरी उस वक्त यहां बताया गया कि कुछ नही, यह दीवार तो फालतू थी, टूट गई, कुछ नही हुआ । सब से पहली चीज टनेल बनी । सब से पहले हम ने टनेल्स पर ध्यान दिया था जो कि पहला कंस्ट्रक्शन था । आज उस का गेट टूट गया, उस गेट के टूटने के साथ जो केबल गैलरी कहलाती है और उस डैम के बीचोबीच जाती है, उस केबल गैलरी से पानी जाता है । उस गैलरी से नजदीक की पहाड़ियो में सीमेंट इंजेक्शन करने के लिये गैलरियां बनी हुई हैं । उन गैलरियों में भी

पानी आ रहा है, आज डैम की कोई चीज नहीं है जिस में पानी न गया हो । इस हकीकत को छिपाने से कोई लाभ नहीं है । हर मौके पर कहा जाता है कि डैम मजबूत है । मुझे यही बात याद आती है कि टांग भी टूट गई, खोपड़ी भी टूट गई, पर सांस तो आती है । लेकिन इस से कोई फायदा नहीं है कि लोगों को गलतफहमीयां में रक्खा जाये । चीज यह है कि आज के दिन पंजाब के सामने दो सवाल हैं । जब एक बड़ा काम करते हैं तो उस में एक जुआ होता है । अगर काम कामयाब हो जाये तो पौ बारह, लेकिन अगर कामयाबी न हो सके, काम फेल हो जाये तो उस का खतरा उतना ही बड़ा होता है । पहले पंजाब के लिये जब डैम ऊपर उठ रहा है, राजस्थान के लिये ऊपर उठ रहा है तब हम सोचते थे कि हमें पानी मिलेगा, लेकिन हम यह भी सोचते थे कि अगर सीमेंट में खराबी हुई या इंजीनियर्स में लड़ाई रही या फारेन एक्सपर्ट और लोकल इंजीनियर्स में जेलसी रही या कोई और चीज हो गई किसी तरह की गडबडी हो गई तो पंजाब और राजस्थान के लोगों की जरा भी खैर नहीं है । आज के दिन जो पोजीशन है उस को देखिये । मैं समझता हूं कि आज यह पोजीशन आ गई है कि हमें कामयाबी नहीं हुई है और डैम खतरे में है, राजस्थान और पंजाब के लोग खतरे में है । इस वक्त मसला जजबाती नहीं है जैसे कि आप बयानात दे रहे हैं । जिन में कहा जाता है कि स्लोकम का यह रिश्ता था बाकी इंजीनियर्स से । यह स्लोकम आज कहता है कि हम को सुप्रीम कमान्ड बनाओ । क्या पहले वह सुप्रीम कमांड में नहीं था । अगर नहीं था तो आप ने इतना बड़ा सफेद हाथी इतनों दामों पर क्यों बांधा हुआ था ? जब वह कहता है कि सुप्रीम कमांड दो तो आप बयान निकालते हैं गवर्नमेंट की तरफ से कि स्लोकम क्या चाहता है यह हम नहीं जान सके । उस की स्पेसिफिक डिमांड है कि मुझे सुप्रीम कमांड बनाओ और मेरे डाइरेक्शन में यह काम हो । गवर्नमेंट ने इस को मंजूर किया या नहीं इसे आप साफ क्यों नहीं बतलाते ? दायें और बायें करते हैं कि आज की मीटिंग में स्लोकम ने यह बात मान ली । इस से कोई तसल्ली नहीं होगी ।

एक सवाल है, हमें इस मौके को किसी तंगदिली के साथ या तगनजरी के साथ नहीं देखना चाहिये । यह एक कौमी मुसीबत है । लोगों के जो शकूक हैं, मैं आनरेबल मिनिस्टर साहब से कहूंगा कि वह उन की तरदीद करें । मिसाल के तौर पर सब यह जानते हैं कि यह गेट तब टूटा जब यह गेट डाला गया । पानी का प्रेशर आ रहा था जब यह डाला गया । इंजीनियर हमें समझाते हैं, मैं गया ३ तारीख को तब वह समझाते हैं कि इस लिये गेट डाला गया कि यह जो प्रेशर है वह कम हो जाये फ्लो की वजह से । मैं इस चीज को नहीं समझ सका, थोड़ी सी साइंस पढ़ी है, स्कूल में पढ़ा था, किसी कालेज में तो नहीं, जब दर्वाजा खुला हो तब प्रेशर ज्यादा हो और बन्द हो जाये तो हायेस्ट पर प्रेशर कम हो जाये । क्या यह सच नहीं है कि पंजाब हाई कोर्ट ने रिट कबूल किया है कि पंजाब गवर्नमेंट उस वक्त तक बेटरमेंट लेवी रिअलाइज नहीं कर सकेगी जब तक पानी खेतों में नहीं पहुचेगा । क्या यह बात दुरुस्त नहीं है कि पंजाब गवर्नमेंट की मर्जी से यह गेट नीचे डाला गया ताकि पानी स्टोर हो और खेतों में पहुचे ताकि वह बैटरमेंट लेवी रिअलाइज करे ? परमात्मा करे वह गलत हो, लेकिन गवर्नमेंट को इस की तरदीद करनी चाहिये ।

कुछ माननीय सदस्य : यह गलत है ।

श्री प्र० चि० दौलता : जो लोग गवर्नमेंट की हर बात में हां मिलाते हैं, हां कहे तो वह हां कहेंगे और ना करे तो ना कहेंगे, उन की बात से जनता को तसल्ली नहीं होती । इसलिये मैं आनरेबल मिनिस्टर साहब से कहूंगा यह आनरेबल मैम्बर्स तो यह चाहते हैं कि उन की बातें अखबारों में छपें जिन को कैरों साहब पढ़ लें कि कहां पर वह यह बोले ।

[श्री प्र० सिं० दौलता]

लेकिन इस से कुछ हासिल नहीं होगा । मुल्क आज मुसीबत में है, जजबाती तौर पर राजस्थान में मुसीबत है, मैं यह जानना चाहता हूं कि क्या पंजाब गवर्नमेंट की ऐसी हिदायत थी या नहीं या इंजीनियर ने अपनी मर्जी से गेट डाला । मैं उन इंजीनियर्स को दाद दे रहा हूं । वह आगे बढ़ रहे हैं, बहुत अच्छे इंजीनियर है, उन इंजीनियरों में मेरा भी विश्वास है, लेकिन मैं उन को इस काम के लिये दाद देने को तैयार नहीं हूं जो कि उन की नाकामी हमारे सामने पड़ी है अब मैं कैसे दाद दे दूं जब कि मेरे सामने डैम टूट रहा है और उस हालत में हम कैसे उनकी ताजीम के लिये सिर झुका दे ? मैं साफ कहना चाहता हू कि जब पहली दीवार टूटी तो हमारा विश्वास टूटा और अब जब टनल टूटा तो हमारा विश्वास और भी रहा सहा टूट गया । आज मैं यह साफ तौर पर कह देना चाहता हूं कि आम जनता के दिल में इन इंजीनियर साहबान के लिये रिस्पैक्ट नही है । अब चूंकि मेरा वक्त खत्म हो चला है इसलिये मैं और ज्यादा न कह कर सिर्फ यही कहना चाहूगा कि आप जो इनक्वायरी करायें वह ऐसी करायें जो कि तसल्लीबख्श हो और ऐसी इनक्वायरी न हो जैसी कि अब तक होती रही है कि जो उसके कसट्रक्शन के लिये जिम्मेदार थे वही लोग इनक्वायरी भी कर रहे थे ।

सब से अहम बात और उसूल की बात मेरे मोहतरीम बुजुर्ग जो कि हिसार से आते हैं उन्होंने अभी हाउस के सामने अर्ज की है और वह यह है कि "हू विल पे फॉर दिस लौस" ? क्या यह बैटरमेंट लेवी पंजाब के किसानो से ली जायेगी या यह बैटरमेंट लेवी गवर्नमेंट आफ इंडिया पे करेगी ? पहले चीफ इंजीनियर भाखडा के मिस्टर शर्मा और दूसरे बहुत सारे इंजीनियर करप्शन की बिना पर पकड़े गये थे और इसी बिना पर पकड़े गये थे कि उस डैम में करप्शन है मगर जैसा कि अक्सर गवर्नमेंट इनक्वायरीज में होता है कि बड़े बड़े अफसर बच जाया करते हैं तो यहां भी जो इनक्वायरी हुई उसमें बड़े बड़े अफसरान तो बच गये और छोटे लोग फंस गये जैसे कि हमेशा छोटे लोग बरबाद हुआ करते हैं । लेकिन आज भाखड़ा में उनका करप्शन फूट निकला है । अब भाखड़ा के बारे में जो इनक्वायरी बिठायी जानी है तो वह ऐसी इनक्वायरी हो जिसमें जनता का विश्वास पैदा हो । साथ ही जो नुकसान हुआ है उसके पेमेंट के बारे में यह साफ हो जाये कि उसके लिये सेंट्रल गवर्नमेंट पे करेगी और पंजाब या राजस्थान के लोग बेटरमेंट लेवी नही देंगे । मुझे तो डर है कि बेटरमेंट लेवी के जमाने में जिन देवियों और मवेशियों को गोलियों से मारा गया क्या उनकी आह भाखड़ा में तो नही है । इस बेटरमेंट लेवी के सिलसिले में १०००० लोगों को जेलो में डाल दिया गया । अब चूंकि मेरा वक्त खत्म हो चुका है इसलिये मैं और ज्यादा वक्त न लेते हुए सिर्फ यही अर्ज करूगा कि पंजाब के लोगो को और हिन्दुस्तान के लोगो को विश्वास दिलाने के लिये आपको एक ऐसी इनक्वायरी बैठानी होगी जिस पर कि जनता का पूर्ण विश्वास हो और जैसी इनक्वायरी आपने बैठाई थी उससे लोगों को तसल्ली नही होगी ।

हाफिज मुहम्मद इब्राहीम : जनाब डिप्टी स्पीकर, एक फिकरा मुझ को याद आता है जो कि मैं शुरू में अर्ज करता हूं ताकि जिस पोजीशन में मैं इस वक्त हूं उसका कुछ अन्दाजा हो सके और वह यह है —

"वक्त कोताह, किस्सा तूलानी" ।

जो वक्त मेरे पास इस वक्त है यहां बोलने के लिये वह मेरे नजदीक इतना काफी नही है कि मैं उन तमाम बातो को इस हाउस के सामने इस थोड़े वक्त मे रख सकूं जिनका कि रखना मेरे नजदीक बहुत जरूरी है । एक दरख्वास्त आपके जरिये से मैं मैम्बर साहबान से करूंगा

कि अगर उनको मुझ से कुछ पूछना हो या सफाई तलब करनी हो तो उस वक्त तक मुझे माफ फरमाये जब तक कि मैं अपनी गुजारिश खत्म न कर लू । अलबत्ता जिस वक्त मैं अपनी बात खत्म कर लू तो आनरेबुल मेम्बर्स मुझ से सवालात पूछ सकते हैं और मै उनको जहां तक मुझ से बन पडेगा क्लेरिफाई करने की कोशिश करूगा ।

खैर मैं यह अर्ज कर रहा था कि जो बात मुझे अर्ज करनी है उसके लिये वक्त काफी नही है लेकिन फिर भी अर्ज करना है अर सब से पहले मै इस ऐवान का और इस हाउस के मेम्बरान का बहुत बहुत शुक्रिया अदा करता हू कि उन्होने एक ऐसी जरूरी चीज की तरफ इतनी तवज्जह की जितनी कि तवज्जह उनको करनी चाहिये थी और उन्होने यह चाहा कि वह मुझ को और गवर्नमेंट को इस मामले के अन्दर कोई रास्ता दिखलाये । लेकिन बदकिस्मती है मेरी कि बावजूद सब सुनने के मैं अपनी मजबूरी अर्ज करूगा माफी मागते हुए कि मुझ को वह रास्ता नजर नही आता है ।

जो तकरीरें मैंने अभी सुनी उनका नतीजा जो है वह मैं हुजूर के और इस ऐवान के सामने अभी रखता हू । उनमे इस नतीजे पर पहुचा जा सकता है कि आया वाकई हमने कोई सही रास्ता उस चीज के हासिल करने का, जिसका कि यहा जिक्र हुआ है, पा लिया कि नही पा लिया । सही है कि मैंने इस वाकये के मुताल्लिक चार बयान इस हाउस मे दिये और उनकी निस्बत आज मैंने सुना भी कि वह कुछ नाकारा बयान थे और उनके अन्दर वह कुछ नही था जो कि मुझ को इस हाउस के सामने पेश करना चाहिए था । मेरी बदकिस्मती है मगर मुझ को इसका अफसोस है कि मैंने अपने भाई मुअज्जिज मेम्बरान से भी वह नही सुना जिसके कि सुनने की मुझ को तवक्को थी कि क्या किया जाय इस मामले के अन्दर । भाखडा डैम मेरे नजदीक हिन्दुस्तान की एक अहमियत वाली चीज है । सिर्फ पजाब का ही नही है और जहा तक मैं हू मेरा ताल्लुक भाखडा डैम से हकीकी ताल्लुक जो है वह आज इस दिल्ली में एक मिनिस्टर बनकर आने से नही हो गया है बल्कि म उससे दिलचस्पी रखता रहा हू उस जमाने से जिस जमाने से कि उसके बनाने की कार्यवाही शुरू हुई और मैं कब्ल इसके कि यहा आया, दो दफे मै वहा गया, उससे पहले मैं तीन दफे भाखडा डैम गया हू और भाखडा डैम की तामीर मैं जो इजीनियर साहबान इसोशिएटेड रहे हैं उनसे भी अपना ताल्लुक रखता रहा हू और इसकी निस्बत मैं मालूमात हासिल करता रहा हू ताकि उससे मुझ को भी कुछ रोशनी हासिल हो । मगर उस हमदर्दी और उस ताल्लुक को जो भाखडा डैम से मेरे दोस्तो ने यहा जाहिर किया और जो वाजई है और उसकी निस्बत कोई शक नही हो सकता है कि पजाब की ही नही बल्कि हिन्दुस्तान के एक बहुत बडे इलाके की अगर आयन्दा किस्मत बनाने का ताल्लुक है तो वह उस डैम से है । अगर वह बिगड जाता है और नही बनता है तो मुद्दत के लिए वह इलाका का इलाका बिगड जाता है और बर्बाद हो जाता है । यह एक जाहिर बात है । यह मैंने इसलिए अर्ज किया कि मैं उस मामले को किस प्वाएट आफ व्यू से देखता हूँ किस निगाह से देखता हूं और मैं हुजूर के जरिए उन मेम्बर साहबान को जिनको कि बहुत ज्यादा दिलचस्पी इस मामले से है यकीन दिलाना चाहता हू कि मै उसकी अहमियत और जरूरत के अहसास में उनसे किसी तरह पीछे नही हूँ ।

अब यह वाकया हुआ और उस वाकये की बिना पर उसको पहले दो वाकयो से मुताल्लिक करके एक बडी डराउनी तस्वीर हाउस के सामने कायम कर ली गई, आखो के सामने एक ऐसा तारीक पहलू एक डार्क साइड आगई जिससे कि उम्मीदो के बजाय उन पर

[हाफिज मुहम्मद इब्राहीम]

खाक पड़ जाये और हिन्दुस्तान के अवाम पर और उस पंजाब के रहने वालों की तबियतों पर वह असर हो कि आज उनके अन्दर जो हिम्मतें बची हुई हैं वह हिम्मतें टूट जायें और वह उस हिन्दुस्तान के अदर काम करने वाले जो उनके मुलाजिम भाई हैं, उनसे मायूस होकर यह समझें कि आज हिन्दुस्तान की किस्मत डूब गई है और देश सम्हल नही सकता। मेरा कहना है कि यह सही बात नही है और यह तरीका सही नही हो सकता। उस मामले को उस नजर से देखना जिस नजर से कि देखा गया है उसकी निस्बत मैं यह अर्ज करता हू और बड़े अदब के साथ अर्ज करना चाहता हू कि यह मामला इस तरह से देखने के काबिल नही हैं। वह तो इस हैसियत से देखने के काबिल हैं कि जिन से हम काम कराते है वह हमारे इंजिनियर हैं, उनका नाम हिन्दुस्तान के अन्दर हैं, वह बड़े इंजिनियर हैं। ताज्जुब यह है कि पंजाब के आदमी यह कहे कि हमारे इंजिनियर नालायक हैं। मैं वह हू कि जो पंजाब के इंजिनियरो की अपने दिल में कद्र करता हू, उनकी काबलियत की, उनके इल्म की, और उनके ऊपर ऐतमाद करता हू। जब भी कोई ऐसा मामला मुल्क के सामने पेश आवेगा तो वह इब्राहीम की राय पर नही चलेगा बल्कि उनकी राय पर चलेगा जो कि उस काम को जानने वाले हैं। और जो उसकी निस्बत राय दे सकते हैं। मैं अर्ज करना चाहता हूं कि अगर उनमें बेहतर इंजिनियर हैं जिनके ऊपर यह मुल्क रिलाई करना चाहता है, तो मैं उन पर रिलाई करने के लिए तैयार हू, उनसे बातें करने के लिए तैयार हू, उनमे रोशनी लेने के लिए तैयार हू, उनकी हिदायत मानने के लिए तैयार हू और जो आदमी इस काम को करते हैं उनको उस रास्ते पर लगाने के लिए तैयार हूं। लेकिन महज इस किस्म की बातें करके तो आप उन सरविसेज का मोराल खत्म कर रहे हैं जिनके ऊपर इस मुल्क की किस्मत का दारोमदार है। जो यहां तकरीरें की गयी हैं उनसे तो उनको आप डिमारेलाइज कर रहे हैं।

इतने बड़े काम में किसी जगह एक कम्बख्त पहाड़ का टुकड़ा टूट गया। उसके बाद क्या हुआ? उसके बाद दूसरे नम्बर पर एक वाल का हिस्सा टूट गया। और उस वाल का हिस्सा टूटना और पहाड़ का हिस्सा टूटना मुताल्लिक हो गया इस बात से कि इसकी जड़ें खोखली हैं। और कहा जाता है कि इसके बाद डैम का नम्बर आता है। मैं कहता हू कि यह बात बेकार है। डैम से और इस वाकें से कोई कहीं वास्ता नही है। मैंने आज भी और इससे पहले भी यह नही सुना कि किसी ने कहा हो कि तुम गलत कहते हो, उससे तो डैम का ताल्लुक है। कोई शख्स यह नही कहता कि डैम को नुक्सान पहुंचा है। वहां मेम्बरान भी गए मुआइना करने के लिए, इंजिनियर भी गए मुआइना करने के लिए और दुनिया भी गई मुआइना करने के लिए, मैं खुद भी वहा गया और मैंने भी सब कुछ अपनी आंखो से देखा। मैं कहता हू कि यह कहना कि इस डैम को नुकसान होगा बिल्कुल बेबुनियाद है। कोई ताल्लुक है ही नही इससे डैम का।

अब क्या है? एक कमेटी बनायी है। कहा जाता है वह गलत है। मैंने इस हाउस मे अर्ज किया कि हमने एक कमेटी बनायी है इसलिए कि वह एन्क्वायरी करे। किसकी हो वह कमेटी? कौन उसके मेम्बरान हों? सोचिए जरा।

एक बात और कही जा रही है। इस हाउस मे भी कहा गया है और बाहर भी कहा जा रहा है कि अभी तक यह नहीं मालूम हो सका है कि इसका काज क्या है। जिनका इस तरह के कामों से कोई ताल्लुक न रहा हो वही इस तरह की बात कह सकते है। जिनका इस तरह के कामों में ताल्लुक रहा हो और जिन्होंने

इस तरह के काम किए हैं उनके दिल में इस वजह से कोई नाराजगी पैदा नहीं हो सकती कि अभी तक काज क्यों नहीं मालूम हो सका। आज वह चीज पानी के अन्दर दबी हुई है और उसके अन्दर जो कुछ है वह पानी के अन्दर छिपा हुआ है। उसमें जाकर कोई काम नहीं कर सकता। मैं नहीं समझ सकता कि कोई उसका काज कैसे बतला सकता है। क्या कोई इंजिनियर है जो यह कहता हो कि वह आज उस काज को निकालकर बता सकता है। आज तक किसी ने ऐसा नहीं कहा। न जाने कहां से लोगों को इंसपिरेशन मिलता है, कहां से खबरें मिलती हैं, कहां से दिमागों में रोशनी आ रही है कि उसका काज मालूम हो गया है। पहले ही दिन मैंने अर्ज कर दिया था कि यह उस वक्त मालूम होगा जिस वक्त कि पानी हट जाएगा। हो सकता है कि दस रोज में हो, १२ रोज में हो, १५ रोज में हो, जब कि यह कार्रवाई खत्म हो जाएगी। इस में मायूस होने की कोई वजह नहीं है। वहां पर काम हो रहा है। मैंने पहले ही इस हाउस में अर्ज कर दिया कि वहां जो पानी आता था उसका आधा तो डाइवर्ट कर दिया जा चुका, वह आधा पानी पावर हाउस के पास अब जाता नहीं। जो आधा पानी बाकी है उसको हटाने के लिए इन्तिजाम हो रहा है और हमको तवक्को है कि वह इन्तिजाम कामयाब होगा। और मैंने यह भी अर्ज कर दिया था कि वह चीज भी तैयार हो गयी है, उसमें कंक्रीट डाली गयी है, उसके खुश्क होने में तीन चार दिन लगेंगे तब वह इस काबिल होगी कि उस पर बोझा रखा जा सके। इस वजह से वह काम अभी नहीं हो पाया है। वह काम भी पूरा हो जाएगा और वह आधा पानी भी बन्द हो जाएगा।

कुछ टैकनिकल बातें मैंने सुनीं, लेकिन मेरे पास उनका जवाब देने का वक्त नहीं है। जिन साहिबान ने यह टैकनिकल बातें कहीं हैं, मैं उनको दावत देता हूं आपके जरिए कि वह मेरे पास तशरीफ लायें। मैं खुद उनको उन बातों का जवाब दूंगा। मैं इस वक्त भी उन टैकनिकल बातों का जवाब दे सकता हूं लेकिन वक्त कम है और मुझे कुछ थोड़ी सी और बात भी कहनी है। लेकिन मैं उन साहिबान को दावत देता हूं कि वह मेरे पास तशरीफ लायें।

इसी सिलसिले में स्लोकम साहब का जिक्र आया। वह अमरीका के एक नामी इंजिनियर हैं। वह यहां आए। मैं अर्ज कर चुका हूं पूरे तौर पर अपने स्टेटमेंट में और अब आपके जरिए कहना चाहता हूं कि जितने किस्से आजतक स्लोकम साहब की मुखालिफत के बारे में मशहूर हुए हैं उनमें से एक भी सही नहीं है कोई नाइत्तिफाकी नहीं है। यहां पर यह कहा गया कि पहले जितनी गड़बड़ी हुई और जितना काम हुआ उसके अन्दर स्लोकम साहब का इत्तिफाक नहीं था। लेकिन यह सही नहीं है। मैं अर्ज करूं कि अगर चार वकील एक मुकदमे को लेकर बैठते हैं तो हो सकता है कि कुछ प्वाइंट्स पर उनकी मुख्तलिफ राय हो लेकिन आखिर में उनमें इत्तिफाक हो जाता है और तभी वह मुकदमा आगे चलता है। इसी तरह से हो सकता है कि इस काम में भी कुछ छोटी बातों में पहले कुछ राय में फर्क रहा हो लेकिन आखिर में वह एक ही नतीजे पर पहुंचे। तो स्लोकम साहब का एक किस्सा बन गया, एक अफसाना बन गया। इस सिलसिले में मुझे एक शेर याद आ गया :

बहुत शोर सुनते थे पहलू में दिल का
जो चीरा तो एक कतरए खूं न निकला।

मेरे पास वक्त कम है लेकिन मैं तो इन बातों को देखते हुए इस नतीजे पर पहुंचता हूं कि जो कुछ देखता हूं ....

उपाध्यक्ष महोदय : आप आराम से अपना वक्त लें।

श्री यादव (बाराबंकी) : उपाध्यक्ष महोदय, अगर आप आधे घंटे का समय और बढ़ा दें तो ज्यादा अच्छा होगा।

उपाध्यक्ष महोदय : उनको जवाब देने के लिए पूरा मौका दिया जाएगा ।

हाफिज मुहम्मद इब्राहीम : अब स्लोकम साहब के बारे में मैं यह अर्ज करना चाहता हूं कि उन्होंने अपना ख्याल कभी कुछ जाहिर किया हो, लेकिन रिकार्ड मेरे सामने है जिसमें लिखा है कि उनके इत्तिफाक से हर बात होती आयी है । और फिर यह किस्सा सुनने में आया कि वह डिक्टेटरी चाहते हैं, एब्सोल्यूट पावर चाहते हैं । लेकिन उसके बाद आप सबने सुन लिया कि बोर्ड की बैठक में उन्होंने इत्तिफाक किया और जिस हैसियत मे वह पहले थे उसी हैसियत को मंजूर किया और जो बाते उनके सामने रखी गयीं उनसे इत्तिफाक करते हुए उन पर अपने दस्तखत कर दिए । तो मैं अर्ज करूं कि यह किस्सा इस काबिल नही था कि इसको अहमियत दी जाती और उसको इस हाउस मे लाया जाता । मैं आपके जरिए अपने भाइयो से अर्ज करना चाहता हूं कि उनका इस हाउस मे इस बात का कहना कुछ माना रखता है । वह जो यहा पर जिम्मेवार बन कर आए हैं उनके लफ्जो के माना यहा और दुनिया के अन्दर बहुत होते हैं । अगर कोई दूसरा आदमी इस बात को कहता हो तो उसके लफ्जो के वह मानी नही होगे जो एक मेम्बर की बात के होगे । अगर दूसरे २५ आदमी कहें कि बाध तबाह हो गया तो उसकी उतनी वुक्कत नही होगी जितनी कि एक मेम्बर के यह कहने की । मेम्बर साहब हमारे बुजुर्ग हैं, हमारे रहनुमा हैं, हमारे लीडर हैं, हमको रास्ता दिखाने वाले है, हमारी खिदमत करते हैं । क्या उनकी बात का ऐतबार नही किया जाएगा । इसलिए मैंने अर्ज किया कि हमें यहा कोई बात कहने में अहतियात की बहुत जरूरत है ।

खैर, स्लोकम साहब को छोड दीजिये । और टैकनिकल प्वाइंट्स को भी मैं थोडी देर के लिये छोडे देता हू । अब कहा जाता है कि एक कमेटी बनायी जाये जो जजो की हो । मेरी समझ मे यह बात नही आई । मैं कतअन इस बात को नही समझा और मैं ने उस कहने के साथ में कोई दलीलें भी इस बात की नहीं सुनी कि इस इस वजह से और इस इस आर्ग्युमेंट की बिना के ऊपर यह बात मौजू और माकूल समझी जाती है कि इस काम के मुताल्लिक तहकीकात करने वाली कमेटी जज की हो—उस में एक जज हो और उस के साथ और आदमी हो । यह भी कहा गया कि उस कमेटी में ऐसा कोई शख्स न हो, जिस का किसी किस्म का कुछ ताल्लुक उससे रहा हो । जो कमेटी बनाई गई है, जिस के मेम्बरान के नाम मे ने यहा पढे, अगर मेम्बर साहबान उन को मुलाहिजा फरमायें, तो उन को मालूम होगा कि उन मे सब ऐसे ही आदमी हैं सिवाय एक शख्स के और वह है खोसला साहब । खोसला साहब का ताल्लुक बोर्ड आफ कनसल्टेन्टस् से रहा है । मैं हुजूर के सामने अर्ज करना चाहता हू कि वह इस तरफ तवज्जह फरमायें कि एक कमेटी बनाई गई है एक मामले की तहकीकात करने को और तहकीकात कर के उस के मुताल्लिक कुछ रायें देने और तदबीरें बताने के लिये । जो शख्स उस की पहली हिस्ट्री से वाकिफ हो, जिन का उस से बराबर ताल्लुक रहा हो, उन मे से एक एक को चुन चुन कर खारिज कर दू और उन आदमियो को मेम्बर बनाऊ, जिनका बिल्कुल किसी किस्म का ताल्लुक नही है, तो मैं क्या समझू इस बात को ? जो फैक्ट्स हैं, इन को कौन रखेगा उन के सामने एक ही आदमी रखे गये हैं खोसला साहब और वह इस लिये रखे गये हैं कि वह उन फैक्ट्स को—पहली बातो को, जो कि हो चुकी हैं, हुई हैं, बाकी लोगो को बतायें और उन के बारे मे अपनी राय दे । बाकी मेम्बर उस को सुनेंगे और फिर जैसा मुनासिब हो, वह फैसला करेंगे, और राय देंगे । और लोग उन के मातहत तो हैं नही कि उन से दब कर राय दे देंगे । इसलिये मैं इस नतीजे पर नही पहुचा

कि जो कमेटी तजवीज की गई है, उस को बदल दिया जाये । मैं ने पहले भी कहा है और मैं फिर कहता हूं कि मेम्बर साहबान मेरे पास आ कर सजेस्ट करें कि फलां इंजीनियर है, फलां इंजीनियर नहीं है ? तो मैं सोचूं, उस पर गौर करूं ।

उस के अलावा है रुपये का मामला—खर्चा क्या होगा ? किस कद्र रुपया इस में इन्वाल्व्ड है, इस मामले की निस्बत सफाई कुछ मेम्बर साहबान चाहते हैं । मैं ने इस हाउस में अपने स्टेटमेंट में अर्ज किया कि जहां तक डैमेज का ताल्लुक है, उस के सिलसिले में तो ५५ लाख रुपया खर्च होगा और उस के ऊपर कोई एक करोड़ रुपया और खर्च हो जायेगा । यह खर्च मैं ने अर्ज किया । उस के मुकाबले में आती हैं रकमें नौ करोड़ रुपयों की, आठ करोड़ रुपयों की । मेरी निस्बत यह फरमाया गया कि मैं ने कुछ दलीलें इस बात की नहीं दीं कि वह ५५ लाख या एक करोड़ रुपया क्यों खर्च होगा, लेकिन जवाब में मैं ने कोई दलील नहीं सुनी कि नौ करोड़ रुपया किस तरीके से खर्च होगा । मैं ने तो उस का मुस्तकिल डिनायल किया है और आज फिर हाउस में खड़े हो कर कहता हूं कि वह बात बेबुनियाद और गलत है और सही नहीं है । मैं जानता हूं कि ये बातें कहां से चलती हैं । लेकिन इस हाउस में मैं कहने का नहीं हूं । मगर हूं मैं इसी दुनिया का आदमी । इस दुनिया का कुछ न कुछ जानता हूं और समझता हूं और इस लिये कह सकता हूं कि कहां से चलती है । मेम्बर साहबान मेरे घर बैठें या अपने घर बिठा कर बातें करें । मैं तो दावत खाने को भी तैयार हूं और खिलाने को भी तैयार हूं—दोनों के लिये तैयार हूं ।

श्री ब्रजराज सिंह (फिरोजाबाद) : पहले दीजिये ।

हाफिज मुहम्मद इब्राहीम : जरूर दीजिये—जिस वक्त चाहे, दावत खाइये ।

229 LSD—10.

लेकिन मेम्बर साहबान अगर हिदायत दें मुझ को, तो मैं उस हिदायत को ठुकरा नहीं सकता । मेरा शुरू से यह तरीका रहा है और मैं उस को बड़ी वक्अत देता हूं और जहां तक मुझ से हो सकता है, मैं उस बात को पूरा करने की भी कोशिश करता हूं । मैं गुफ्तगू कर लूंगा, बतला दूंगा, जो कुछ मेरा ख्याल है, वह भी अर्ज कर दूंगा । सुन भी लूंगा, जो कुछ मैम्बर साहबान फरमाते हैं और बिल्कुल गैरजानिबदारी से उस मामले को देखूंगा । लेकिन जो इस वक्त किया है और जो कुछ इस वक्त हम को यहां करना है, उस के लिये जो कुछ कदम उठाना जरूरी है, उस के होते हुए भी अगर इस बात की जरूरत महसूस की जाये कि उस कमेटी को तब्दील कर दो और उस के बजाये और कोई कमेटी बना दो, या जिन इंजीनियरों के साथ में इस वक्त यह काम है, उस से ले कर और इंजीनियर के हाथ में दे दो, तो मैं अर्ज करूं कि दूसरा आने का नहीं है । अगर आप दूसरे को बुलायें, तो वह आने का नहीं है । जो पहले का—अपने प्रिडिसेसर का—हश्र देख लेगा, उस की हिम्मत कभी भी नहीं होगी आने की और वह समझेगा कि

निकलना खुल्द से आदम का सुनते आये हैं लेकिन
बहुत बे-आबरू हो कर तेरे कूचे से हम निकले

यह देख कर वह कभी आने का नहीं है । मैं इंजीनियरों को बुलाऊं, तो उन दिक्कतों और उन मुश्किलात को भी सामने रखना चाहिये, जो कि मेरे सामने आती हैं और उन लोगों के सामने आती हैं, जो कि उन कामों को करते हैं ।

इस मामले को हमदर्दी और ताल्लुक के साथ सबको देखना चाहिये, इस पर सब को इत्तिफाक है । कोई इससे इन्कार नहीं कर सकता । इंजीनियर मुलाजिम हो या न मुलाजिम हो, वह खास पंजाब में रहता हो, या

[हाफिज मुहम्मद इब्राहीम]

हिन्दुस्तन मे कही और रहता हो, सब को भाखडा बाध अजीज है और वह बिलकुल हमारी दिलोजान है। हम उस के लिए सब कुछ करने के लिये तैयार है। कोई मेम्बर इस हाउस मे नही मिलेगा, जो कि इस से इख्तिलाफ रखता हो। लेकिन नेशन मे ना-उम्मीदी पैदा करना, कौम मे डीमारालाइ-जेशन पैदा करना, मै नही समझता कि वह सही हो सकता है और उसको बन्द करना चाहिये। जहा तक गवर्नमेंट के मुलाजिमो को हिदायत देने की, बतलाने की जरूरत का ताल्लुक है, उसका तरीका मैने अर्ज किया है और उस तरीके को अख्तियार कर के उस मे कामयाबी हो सकती है। उससे हमदर्दी भी हासिल की जा सकती है। ठीक दिल से काम भी हो सकता है। इस लिये मै आप के जरिये से मेम्बर साहबान की खिदमत मे यही अर्ज कर रहा हू कि जहा तक भाखडा का ताल्लुक है, भाखडा गरीब को बदनाम न किया जाये। वह ऐसी रफी-उश्शान मंजिल बन रही है हिन्दुस्तान के अन्दर कि दुनिया देखेगी उस को और समझेगी कि हा, हिन्दुस्तानी भी कुछ हैं, उनकी कुछ हकीकत है, कुछ इल्म रखते है और कुछ वाकफियत भी रखते है। अभी मेरे दोस्त कह रहे थे कि क्यो नही अमरीका और इगलैंड से एक्सपर्ट्स को बुलाते। मै इस बात को अच्छा समझता हू कि मेरा हिन्दुस्तान का इजीनियर दस दफा ठोकर खा कर गिरे, लेकिन वह अपनी काबलियत से इस काम को पूरा करे। मै तो वह आदमी हू। मै किसी इजीनियर से काम बिगडने पर उसका ना अहल नही करार देता।

श्री बी० च० शर्मा अगर यही बात है, तो स्लोकम को क्यो बुलाया है ?

हाफिज मुहम्मद इब्राहीम अगर उन को बुलाया, तो मै यह कब कह रहा हू कि ठीक किया। मेरे अर्ज करने का जो मतलब है, उसके जो नतीजे निकलते है उसको हर एक साहिबे अक्ल समझ सकता है कि उस का क्या नतीजा निकलता है। मुझे कहने और सुनाने की जरूरत नही है। एक फारसी का शेर है, जिस के मानी मै अर्ज कर दूगा, वह इस तरह है—"हक्का कि बा उकूबत दोजख बराबर अस्त", यानी कसम खाता हू खुदा की कि दोजख के बराबर है, क्या ? "रफतन बपाये मर्दिये हमसाया दा बहिश्त"—जन्नत मे जाना पडौसी की मदद से। मै अमरीका का मरहून-मन्नत, उसका पाबन्द बनू, उसकी खिदमत करता फिरू, कोशिश करके उसमे मदद हासिल करू, औरो की हासिल करू, तो जो कुछ मै अपनी जवामर्दी मे कर सकता हू, वह क्यो न करू ? मै मेम्बरान से अर्ज करना चाहता हू कि वे इसको अपने सामने रखे और अपनी मविसिज की खराबियो के बावजूद, बावजूद उन नुक्सानो के, बावजूद उन एतराजो के, जो उन पर किये जाते है, उनकी कीमत को समझे और समझ कर इस बात की कोशिश करे कि वे दिल से काम करे।

बाकी जो आपका फरमाना है, इस हाउस का कहना है, उसके सामने मै कोई चीज नही हू। यहा पर जो चीज पास कर दी जाये, मेरी क्या मजाल है कि मै कही एक कदम भी हिल सकता हू—मै उसके खिलाफ कभी नही जा सकता हू। यह अर्ज करने का मौका है, इसलिये मै अर्ज कर रहा हू। मै उम्मीद करता हू कि मेम्बर साहिबान इस तरफ तवज्जह फरमायेंग और इसके साथ-साथ मै इस बात को एक बार फिर दोहराता हू कि भाखडा डैम जो है, वह बिल्कुल सही है, बिल्कुल महफूज है, उसका कुछ भी बिगडा नही है। मै खुदा से दरख्वास्त करता हू कि उसका कभी भी कुछ न बिगडे और बिगडेगा भी नही। कोई बात ऐसी नही होगी और न हम कोई ऐसी बात होने देंगे। हम इसको बरदाश्त नही करेंगे कि वह बिगडे, वह तबाह हो और हिन्दुस्तान को जो इससे फायदा पहुचने वाला है, उससे वह महरूम हो जाये या वह फायदा उसको न पहुचे। इन्सान

भरोसा रख और भरोसा रख कर आगे बढ़ जो काम आज नहीं हो सका है, उसको हम कल कर लेंगे, जो आज नहीं हो सका है, उसको सुबह कर लेंगे। हमको यकीन अपने ऊपर होना चाहिये कि हम सब काम कर लेंगे, अगर अब नहीं कर सके है, तो अगली सुबह कर लेंगे। हमें अपनी हिम्मत को कायम रखना है। जो कदम अब नही उठे है, वे कल उठ जायेंगे अगले मिनट मे उठ जायेंगे।

इन अलफाज के साथ मैं आपका शुक्रिया अदा करता हू कि आपने मुझे इतना वक्त दिया और मैं उम्मीद करता हू कि मैम्बर साहिबान को भी पूरा इत्मीनान हो गया होगा पूरी तसल्ली हो गई होगी।

Shri Narayanankutty Menon (Mukandapuram): On a point of clarification Immediately after Mr Slocum's arrival here after the mishap, there were many controversial paper reports that there was a cold war developing between Mr Slocum and the engineers here Of course, it is not believed, but I would like to know whether that is over now and there is complete unanimity between them

Mr Deputy-Speaker He has answered that already

Hafiz Mohammad Ibrahim I have explained that already

उपाध्यक्ष महोदय कोई झगडा स्लोकम और बाकी इजीनियर्स मे नही है। पूरे इत्तिफाक से फैसले हो रहे हैं। जिन बातो के फैसले होते है पूरे इत्तिफाक से होते है, और जो बातें आज तक की है, वे आपस मे मश्विरे से की हैं। कोई फर्क नही उनमे आया है।

Shri Warior (Trichur) I would request that those of us who have not understood the speech of the hon Minister in Hindi may get the translation of it in English

Mr Deputy-Speaker: He has told us that everything is being decided by mutual consultation, and there are absolutely no differences between Mr Slocum and the other engineers The difference had arisen at a particular moment, but now adjustments have been made, and he has agreed to everything that has so far happened

Shri Narayanankutty Menon: Thank you very much

श्री प्र० सि० दौलता मत्री महोदय ने कहा है कि डैम को कोई खतरा नही है। डैम का सवाल नही है। हम यह जानना चाहते हैं कैटिगोरिकली गवर्नमेंट से जानना चाहते हैं साफ तौर से जानना चाहते हैं कि जो बगल की पहाडियां हैं अगर वे लूज हो गई और उनमे से पानी बह गया तो क्या होगा ? डैम बहस में नही है। सवाल यह है कि जो बगल की पहाडियां हैं उनको इतना थोथा तो नही कर दिया गया है कि उनको कही पानी तो नही तोड सकेगा ?

उपाध्यक्ष महोदय इसके बारे में कौन कुछ कह सकता है।

क्या सरदार इकबाल सिह को अब कुछ कहना है ?

सरदार इकबाल सिंह मै एक दो मिनट मे खत्म कर दूगा।

जिन मैम्बर साहिबान ने इस बहस मे भाग लिया है मैं उनका शुक्रगुजार हू। जो बडा हादसा हुआ था इसके बारे मे इस हाउस को और इस हाउस के जरिये सारे मुल्क की अटेंशन डाइवर्ट करने की कोशिश की गई है। जहां तक भाखडा डैम के इजीनियर्स का ताल्लुक है मैं समझता हू कि वहा जो काम करने वाले हैं, वे बहुत ही बेहतरीन इजीनियर्स हैं और बहुत ही बेहतरीन काम करने वाले वे लोग हैं। हमें उन पर फख्र है, उनके काम पर फख्र है। इन्क्वायरी कमेटी के बारे में मैंने इस वास्ते अपनी बात नही कही है कि मुझे

[सरदार इकबाल सिंह]

उन पर एतमाद नहीं है । जहां तक जनरल मैनेजर और दूसरे इंजीनियर्स का ताल्लुक है, उन्होंने बैस्ट काम किया है और उन पर पंजाब के लोग और शासन फख्र कर सकते है ।

जहां तक भाखड़ा डैम से खुशहाली होने का ताल्लुक है, जो खुशहाली उसके साथ कम से कम पंजाब के लोगों की वाबस्ता है, उससे सब लोग वाकिफ हैं । इसलिये जो उसके बारे में एकशन और रिएकशन हो रहा है, वह लाजिमी तौर पर पंजाब के लोगो पर आता है । इन तीन चीजों को मद्देनजर रखते हुये इस डिसकशन की मांग की गई थी और साथ ही साथ जो दस वर्कर्स वहा पर मरे हैं उनको कम से कम हमें अपनी बधाई भेजनी चाहियें कि उन्होंने बड़ी बहादुरी के साथ आखिरी वक्त तक जब मौत भी उनको नजर आ रही थी, अपनी ड्यूटी निभाई है, ड्यूटी पर वे डटे रहे हैं और इस काम के लिये उन्होंने अपनी जानें दी हैं ।

उपाध्यक्ष महोदय यह पहले भी मिनिस्टर साहब कह चुके हैं और इसको किया जा चुका है । हम सब को इस बात पर फख्र है कि उन लोगो ने अपनी जानो पर खेल करके भी अपनी ड्यूटी अदा की है, अपनी जानें कुर्बान की हैं । मेरा ख्याल है कि मृत व्यक्तियो के परिवारो को हमारी हमदर्दी पहुचा दी जायेगी ।

चौ० रणवीर सिंह मुझे भी एक प्रश्न पूछना है और आपकी आज्ञा हो तो....

उपाध्यक्ष महोदय सवाल का वक्त चला गया । मेरा सवाल अब आप सुनिये ।

The question is:

"That this House takes note of the Statements made by the Minister of Irrigation and Power in the House on the 22nd August, 24th August, 2nd September and 7th September, 1959, regarding the damage caused by the accident on the 21st August, 1959 to the hoist chamber of a tunnel at the Bhakra Dam".

The motion was adopted

17.46 hrs.

*TUNGABHADRA HIGH LEVEL CANAL

Shri Rami Reddy (Cuddapah): Mr Deputy-Speaker, at the outset, I express my gratitude to you for the opportunity you have given me to raise this discussion in spite of heavy pressure of work before the House.

Three points arise for discussion in regard to this Tungabhadra High Level Canal They are

(a) Elimination of Chitravathi anicut and Pulivendla Canal from the scheme;

(b) The capacity of the Mid-Pennar reservoir and the Mid-Pennar South Canal and its head sluice, and

(c) The Phasing of the scheme itself into two phases

I am confining my remarks purely to these three aspects, because of the shortness of the time at my disposal This scheme is intended to benefit the famine-stricken areas of Cuddapah, Anantapur, Kurnool and Bellary districts These are famine-stricken areas. Here the rainfall is the lowest in the south. The *per capita* income is also the lowest; though the people are very hard-working, they have no other source of irrigation. This area is subject to famine once in every two or three years. Therefore, the composite Madras State contemplated this High Level Canal scheme for the benefit of these four districts. This has been under contemplation of the composite Madras State for over 100 years. Several investigations had been done, and for a proper appreciation of the three points I have raised, I may

* Half-an-hour discussion.